Curriculum and Credit Framework

As per NEP 2020

For

B.A. SANSKRIT (SINGLE MAJOR)

(To be effective from the Academic Session 2026-27)

Department of Indian Knowledges and Languages

Gurugram University, Gurugram

(A State Govt. University Established Under Haryana Act 17 of 2017)

B.A Sanskrit (Single Major)

1- 67

विषयसूची

S. No. Particulars	Particulars	Page No.
1	पृष्ठभूमि	03
2	**पाठ्यक्रम के उद्देश्य**	04
2	कार्यक्रम शैक्षिक परिणाम	05
3	कार्यक्रम परिणाम	05
4	कार्यक्रम-विशिष्ट परिणाम	06
5	योग्यता वर्णन	07
6	पात्रता	07
7	पाठ्यक्रमों का विवरण	08-14
8	पाठ्यक्रम	15

स्नातक (संस्कृत) - पृष्ठभूमि

स्नातक (संस्कृत) पाठ्यक्रम भारतीय ज्ञान-परंपरा, भाषा और संस्कृति की समृद्ध विरासत को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समझने और प्रसारित करने के उद्देश्य से निर्मित किया गया है। संस्कृत केवल एक प्राचीन भाषा नहीं, बल्कि भारतीय दर्शन, साहित्य, विज्ञान, नीति एवं जीवन-मूल्यों का आधार है, जिसका प्रभाव आज भी वैश्विक स्तर पर देखा जा सकता है।

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा की व्याकरणिक संरचना, साहित्यिक परंपरा एवं दार्शनिक गहराइयों से परिचित कराना है, ताकि वे न केवल शास्त्रीय ग्रंथों का अध्ययन कर सकें, बल्कि उनकी समकालीन प्रासंगिकता को भी समझ सकें।

पाठ्यक्रम की संरचना इस प्रकार की गई है कि यह विद्यार्थियों के बौद्धिक, नैतिक एवं व्यावसायिक विकास को सुनिश्चित करे। इसमें परंपरागत विषयों के साथ-साथ आधुनिक एवं रोजगारोन्मुखी घटकों—जैसे अनुवाद, संचार कौशल, भाषाविज्ञान, सृजनात्मक लेखन, पत्रकारिता एवं शोध-अभिव्यक्ति—को भी सम्मिलित किया गया है।

स्नातक (संस्कृत) के माध्यम से विद्यार्थी शिक्षण, अनुवाद, जनसंचार, राजभाषा, प्रशासन एवं शोध जैसे विविध क्षेत्रों में अपने करियर का निर्माण कर सकते हैं। साथ ही, यह पाठ्यक्रम उनमें सांस्कृतिक संवेदनशीलता, नैतिक दृष्टि एवं विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास करता है।

अतः यह पाठ्यक्रम परंपरा और आधुनिकता के समन्वय का एक सशक्त माध्यम है, जो विद्यार्थियों को ज्ञान, कौशल एवं मूल्यों से संपन्न बनाकर उन्हें वैश्विक परिदृश्य में प्रतिस्पर्धी बनने के लिए तैयार करता है।

ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

बी.ए. (संस्कृत) पाठ्यक्रम का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य भारतीय सभ्यता की दीर्घकालीन ज्ञान-परंपरा में निहित है। संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीनतम एवं वैज्ञानिक भाषाओं में से एक है, जिसमें वेद, उपनिषद, महाकाव्य, पुराण, दर्शन, आयुर्वेद, गणित, ज्योतिष एवं नाट्यशास्त्र जैसे विविध विषयों का व्यापक साहित्य उपलब्ध है। यह भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं रही, बल्कि भारतीय समाज के सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं बौद्धिक जीवन की आधारशिला भी रही है।

ऐतिहासिक दृष्टि से संस्कृत ने प्राचीन भारत में शिक्षा, धर्म, दर्शन और शासन-व्यवस्था को दिशा प्रदान की। गुरुकुल परंपरा से लेकर प्राचीन विश्वविद्यालयों तक, संस्कृत ज्ञान के संवहन का प्रमुख माध्यम रही। समय के साथ-साथ इस भाषा ने विभिन्न भारतीय भाषाओं एवं साहित्यिक परंपराओं को प्रभावित किया, जिससे एक समृद्ध सांस्कृतिक एकता का विकास हुआ।

सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में संस्कृत भारतीय जीवन-मूल्यों, आचार-विचार, परंपराओं और लोकाचार का वाहक है। इसमें निहित ग्रंथ मानव जीवन के नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक पक्षों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। "वसुधैव कुटुम्बकम्", "सत्यं वद, धर्मं चर" जैसे आदर्श आज भी वैश्विक मानवता के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं।

आधुनिक युग में भी संस्कृत की प्रासंगिकता बनी हुई है। योग, आयुर्वेद, भारतीय दर्शन, तथा सांस्कृतिक अध्ययन के क्षेत्र में विश्वभर में इसकी महत्ता बढ़ रही है। इस संदर्भ में बी.ए. (संस्कृत) पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को न केवल अतीत की समृद्ध विरासत से जोड़ता है, बल्कि उन्हें वर्तमान और भविष्य के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी सक्षम बनाता है।

इस प्रकार, यह पाठ्यक्रम ऐतिहासिक गहराई और सांस्कृतिक समृद्धि के समन्वय के माध्यम से विद्यार्थियों में ज्ञान, मूल्य और वैश्विक दृष्टि का विकास करता है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

बी.ए. (संस्कृत) पाठ्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा की मूलभूत एवं उन्नत व्याकरणिक संरचना का ज्ञान प्रदान करना।
- संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं–काव्य, नाटक, गद्य, महाकाव्य एवं शास्त्रीय ग्रंथों–से परिचित कराना।
- भारतीय ज्ञान-परंपरा, दर्शन एवं सांस्कृतिक मूल्यों की समझ विकसित करना।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, विश्लेषणात्मक क्षमता एवं अभिव्यक्ति कौशल का विकास करना।
- संस्कृत भाषा के माध्यम से नैतिक मूल्यों एवं मानवीय संवेदनाओं को सुदृढ़ करना।
- पाठ्यक्रम को रोजगारोन्मुखी बनाते हुए अनुवाद, पत्रकारिता, संचार कौशल एवं सृजनात्मक लेखन में दक्षता विकसित करना।
- विद्यार्थियों को शोध-पद्धति एवं अकादमिक लेखन के लिए तैयार करना।
- संस्कृत को आधुनिक संदर्भों–जैसे तकनीकी, मीडिया एवं प्रशासन–से जोड़ने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा एवं विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों के लिए सक्षम बनाना।
- भारतीय संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना।

Programme Educational Objectives (PEOs)

- PO1: संस्कृत भाषा, व्याकरण एवं साहित्य की मूलभूत एवं उन्नत समझ विकसित करना।
- PO2: भारतीय ज्ञान-परंपरा, दर्शन एवं सांस्कृतिक विरासत का सम्यक् ज्ञान प्रदान करना।
- PO3: विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, विश्लेषणात्मक क्षमता एवं तार्किक दृष्टिकोण का विकास करना।
- PO4: प्रभावी संप्रेषण कौशल (मौखिक एवं लिखित) का विकास करना।
- PO5: पाठ्यक्रम को रोजगारोन्मुखी बनाते हुए अनुवाद, पत्रकारिता एवं संचार कौशल में दक्षता प्रदान करना।
- PO6: शोध-पद्धति एवं अकादमिक लेखन की क्षमता विकसित करना।
- PO7: नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं सांस्कृतिक चेतना का विकास करना।
- PO8: विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा एवं विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों के लिए तैयार करना।

Programme Outcomes (POs) – B.A. Sanskrit

बी.ए. (संस्कृत) कार्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नलिखित क्षमताएँ एवं गुण अर्जित करेंगे–

- PO1: भाषा दक्षता (Language Proficiency) संस्कृत भाषा के व्याकरण, शब्दावली एवं शुद्ध प्रयोग में दक्षता ।
- PO2: साहित्यिक ज्ञान (Literary Competence) संस्कृत साहित्य की प्रमुख विधाओं–काव्य, नाटक, गद्य एवं महाकाव्य–का सम्यक् ज्ञान एवं विश्लेषण करने की क्षमता।
- PO3: दार्शनिक एवं सांस्कृतिक समझ (Philosophical & Cultural Understanding) भारतीय दर्शन, परंपरा एवं सांस्कृतिक मूल्यों की गहन समझ ।
- PO4: आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक क्षमता (Critical Thinking) शास्त्रीय ग्रंथों का तार्किक, आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन करने की क्षमता।
- PO5: संप्रेषण कौशल (Communication Skills) संस्कृत सहित अन्य भाषाओं में प्रभावी मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति कौशल का विकास ।
- PO6: रोजगारोन्मुखी दक्षता (Employability Skills) अनुवाद, पत्रकारिता, जनसंचार, कार्यालयी कार्य एवं सृजनात्मक लेखन जैसे क्षेत्रों में व्यावहारिक कौशल ।
- PO7: शोध एवं अकादमिक क्षमता (Research Aptitude) प्रारंभिक शोध-पद्धति, संदर्भ लेखन एवं अकादमिक अभिव्यक्ति में दक्षता विकसित ।
- PO8: नैतिक एवं मानवीय मूल्य (Ethical & Human Values) सत्य, अहिंसा, कर्तव्यनिष्ठा एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मानवीय मूल्यों का विकास ।

Programme Specific Outcomes (PSOs) – B.A. Sanskrit

बी.ए. (संस्कृत) कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थी निम्नलिखित विषय-विशिष्ट दक्षताएँ अर्जित करेंगे–

- **PSO1**: भाषा एवं व्याकरण दक्षता- संस्कृत भाषा की संरचना–संधि, समास, कारक, धातु-रूप आदि–का शुद्ध एवं प्रभावी प्रयोग करने में सक्षम होंगे।
- **PSO2:** शास्त्रीय ग्रंथों का अध्ययन एवं व्याख्या- वेद, उपनिषद, महाकाव्य, नाटक एवं अन्य शास्त्रीय ग्रंथों का मूल रूप में अध्ययन, अनुवाद एवं व्याख्या करने की क्षमता विकसित करेंगे।
- **PSO3:** साहित्यिक एवं दार्शनिक विश्लेषण- संस्कृत साहित्य एवं भारतीय दर्शन के विविध आयामों का आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।
- **PSO4:** अनुप्रयुक्त संस्कृत (Applied Sanskrit)- अनुवाद, कार्यालयी संस्कृत, पत्रकारिता, सृजनात्मक लेखन एवं जनसंचार के क्षेत्र में संस्कृत के व्यावहारिक उपयोग में दक्षता प्राप्त करेंगे।
- **PSO5:** शोध एवं अकादमिक लेखन कौशल- शोध-पद्धति, संदर्भ लेखन, लेख/प्रबंध लेखन एवं प्रस्तुतीकरण कौशल में प्रवीणता प्राप्त करेंगे।
- **PSO6**: सांस्कृतिक एवं नैतिक दृष्टि- भारतीय संस्कृति, परंपरा एवं मानवीय मूल्यों के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार के प्रति जागरूक एवं संवेदनशील बनेंगे।
- **PSO7:** बहुविषयी समन्वय क्षमता- संस्कृत ज्ञान को भाषा-विज्ञान, इतिहास, दर्शन, योग, आयुर्वेद एवं अन्य आधुनिक विषयों के साथ जोड़ने की क्षमता विकसित करेंगे।
- **PSO8:** व्यावसायिक एवं करियर उन्मुखता- शिक्षण, अनुवाद, मीडिया, प्रशासन, राजभाषा एवं शोध जैसे क्षेत्रों में करियर निर्माण हेतु आवश्यक कौशल अर्जित करेंगे।

योग्यता

बी.ए. (संस्कृत) पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु निम्नलिखित योग्यताएँ निर्धारित हैं–

- अभ्यर्थी ने किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड से 10+2 (सीनियर सेकेंडरी) परीक्षा उत्तीर्ण की हो।
- 12वीं कक्षा में संस्कृत विषय का अध्ययन किया हो (कुछ विश्वविद्यालयों में यह अनिवार्य/वांछनीय हो सकता है)।
- न्यूनतम अंक (आमतौर पर 50%) विश्वविद्यालय/संस्थान के नियमानुसार निर्धारित हैं।
- आरक्षित वर्ग (SC/ST/OBC आदि) के अभ्यर्थियों को नियमानुसार अंकों में छूट प्रदान की जाएगी।

करियर के अवसर

दुनिया भर में हमारी संस्कृत भाषा को महत्वपूर्ण महत्त्व स्थान दिए जाने के कारण इसमें रोजगार के कई अवसर है संस्कृत साहित्य में कुछ नौकरियां निम्नलिखित हैं जो आपके लिए मददगार हो सकती है

- भारतीय सेना में धर्माधिकारी की नियुक्ति में सहायक ।
- समाज में धार्मिक कार्यों के लिए संस्कृत भाषा की आवश्यकता।
- विभिन्न धार्मिक स्थलों के लिए धर्मगुरु पुजारी हेतु।
- पत्रकारिता, रेडियो, जन संचार माध्यमों में संस्कृत भाषा में रोजगार के अवसर।
- संस्कृत अनुवादक, शोधकर्ता तथा अभिलेख एवं पांडुलिपी क्षेत्र में रोजगार के अवसर।
- योग शिक्षक के रूप में संस्कृत में रोजगार के अवसर।
- आयुर्वेद चिकित्सा, वास्तु-सलाहकार के रूप में भी संस्कृत में रोजगार के अवसर।
- कथा वाचक एवं उपदेशक के रूप में संस्कृत में रोजगार के अवसर।

Scheme of Programme

(Scheme UG A2: Undergraduate Programmes

(Single Major)

Semester 1

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Total Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
Core Course(s)														
CC-A1	संस्कृत महाकाव्य -1 रघुवंशम् एवं किरातार्जुनीयम्	Revised	3	1		3	1		4	30	70	-	-	100
CC-A2	संस्कृत सम्भाषण तथा उच्चारण कौशल	Revised	3	1		3	1		4	30	70	-	-	100
CC-A3	संस्कृत कथा साहित्य- पञ्चतन्त्रम्	Revised	3	1		3	1		4	30	70	-	-	100
Minor/ Vocational Course(s)														
MIC-1	संस्कृत साहित्य में राष्ट्रवाद	Revised	1	1	-	1	1	-	2	15	35	-	-	50
Multidisciplinary Course(s)														
MDC-1	श्रीमद्भगवद्गीता	Revised	2	1	-	2	1	-	3	25	50	-	-	75
Ability Enhancement Course(s)														
AEC-1	संस्कृत भाषा एव. सम्प्रेषण-1	Revised	1	1	-	1	1	-	2	15	35	-	-	50
Skill Enhancement Course(s)														

SEC-1	संस्कृत साहित्य में योग एवं ध्यान	Revised	2	-	1	2	-	1	3	15	35	5	20	75
Value-added Course(s)														
VAC-1	भारतीय ज्ञान परंपरा: शिक्षा एवं संस्कृति का स्वरूप	Revised	1	1	-	1	1	-	2	15	35	-	-	50
Total Credits									**24**					**600**

Semester 2

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
Core Course(s)														
CC-A4	संस्कृत नाटक एवं छंद	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100
CC-A5	संस्कृत व्याकरण-1	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100
CC-A6	संस्कृत महाकाव्य -2 बुद्धचरित एवं सौन्दरनन्द	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100
Minor/ Vocational Course(s)														
MIC-2	संस्कृत साहित्य में नाट्य एवं रंगमंच	Revised	1	1	-	1	1	-	2	15	35	-	-	50
Multidisciplinary Course(s)														
MDC-2	नीति साहित्य	Revised	2	1	-	2	1	-	3	25	50	-	-	75
Ability Enhancement Course(s)														
AEC-2	संस्कृत भाषा एव. सम्प्रेषण-2	Revised	1	1	-	1	1	-	2	15	35	-	-	50
Skill Enhancement Course(s)														
SEC-2	वैदिक आचार एवं उपासना पद्धति	Revised	2	1	-	2	1	-	3	15	35	5	20	75
Value-added Course(s)														
VAC-2	विदुरनीति	Revised	1	1	-	1	1	-	2	15	35	-	-	50
Total Credits									**24**					**600**

Semester 3

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
					Core Course(s)									
CC-A7	आधुनिक संस्कृत साहित्य- शिवराजविजय	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100
CC-A8	संस्कृत गद्य साहित्य शुकनासोपदेश	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100
CC-A9	उपनिषद् साहित्य	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100
					Minor/ Vocational Course(s)									
MIC-3	रामायण	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100
					Multidisciplinary Course(s)									
MDC-3	वैदिक दर्शन	Revised	2	1	-	2	1	-	3	25	50	-	-	75
					Ability Enhancement Course(s)									
AEC-3	संस्कृत भाषा एव. सम्प्रेषण-3	Revised	1	1	-	1	1	-	2	15	35	-	-	50
Total Credits									**21**					**525**

Semester 4

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
Core Course(s)														
CC-A10	संस्कृत व्याकरण-2	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100
CC-A11	संस्कृत गीतिकाव्य-मेघदूत	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100
CC-A12	संस्कृत साहित्य में नीतिकाव्य	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100
Minor/ Vocational Course(s)														
MIC/VOC-4	MIC-4-वैदिक यज्ञ पद्धति **अथवा** VOC1- 4 आयुर्विज्ञान	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100
Ability Enhancement Course(s)														
AEC-4	संस्कृत भाषा एव. सम्प्रेषण-4		1	1	-	1	1	-	2	15	35	-	-	50
Value-added Course(s)														
VAC-3	चाणक्य नीति		1	1	-	1	1	-	2	15	35	-	-	50
Total Credits									**20**					**500**

Semester 5

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
Core Course(s)														
CC-A13	संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100
CC-A14	भाषा विज्ञान	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100
CC-A15	संस्कृत व्याकरण तथा लेखन कौशल	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100
Minor/ Vocational Course(s)														
VOC-5 /MIC-5	**VOC 5**-ज्योतिष का मूलभूत ज्ञान **अथवा** **MIC 5**- पुराण साहित्य	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100
Skill Enhancement Course(s)														
Internship									4			30	70	100
Total Credits									**20**					**500**

Semester 6

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
Core Course(s)														
CC-A16	भारतीय दर्शन-तर्कसंग्रह	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100
CC-A17	अभिलेखशास्त्र **(Epigraphy)**	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100
CC-A18	संस्कृत नाट्य साहित्य: अभिज्ञानशाकुन्तलम्	Revised	2	1	-	2	1	-	3	25	50	-	-	75
Minor/ Vocational Course(s)														
MIC-6	भारतीय सामाजिक संस्थान और राज्य व्यवस्था	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100
MIC-7/ VOC-7	MIC 7-लौकिक संस्कृत साहित्य (नाटक) **अथवा** VOC 7-लेखन कौशल एवं संस्कृत पत्रकारिता	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100
Skill Enhancement Course(s)														
SEC-3	संस्कृत भाषा में उच्चारण प्रक्रिया एवं कंप्यूटर का प्रयोग		2	-	1	2	-	1	3	15	35	5	20	75

Total Credits									22					550

B A SANSKRIT
Semester- 1
Paper – 1

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Cre dits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A1	संस्कृत महाकाव्य -1 रघुवंशम् एवं किरातार्जुनीयम्	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम संस्कृत महाकाव्य परम्परा के दो महत्वपूर्ण ग्रंथों – रघुवंशम् तथा किरातार्जुनीयम् – के अध्ययन पर आधारित है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को संस्कृत महाकाव्य साहित्य की परम्परा, काव्यगत विशेषताओं, अलंकार-योजना, रस-सौन्दर्य तथा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का ज्ञान प्राप्त होगा। कालिदास कृत *रघुवंशम्* के अध्ययन से आदर्श राजधर्म, लोकमंगल, नीति, संस्कृति एवं चरित्र-चित्रण की विशेषताओं का बोध होगा। वहीं भारवि रचित *किरातार्जुनीयम्* के अध्ययन से ओजस्वी भाषा, अर्थगौरव, नीतितत्त्व तथा वीररस की अभिव्यक्ति का ज्ञान प्राप्त होगा। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में संस्कृत काव्य-पाठ, व्याख्या, साहित्यिक विश्लेषण एवं आलोचनात्मक चिंतन की क्षमता विकसित करेगा तथा भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रति उनकी समझ को समृद्ध करेगा।

अधिगम उद्देश्य

1. काव्य एवं साहित्य के अध्ययन से भाषा, भाव एवं सौन्दर्य-बोध का विकास।
2. विद्यार्थियों में साहित्यिक अभिरुचि, कल्पनाशक्ति एवं चिंतन क्षमता वृद्धि ।
3. इससे सांस्कृतिक, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की अभिवृद्धि ।
4. काव्य एवं साहित्य की प्रमुख विधाओं एवं तत्वों को समझना।
5. साहित्यिक रचनाओं के भाव, शैली एवं संदेश का विश्लेषण ।

6. विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति, सौन्दर्य-बोध एवं आलोचनात्मक दृष्टि का विकास ।

पाठ्यक्रम

इकाई 1 - काव्य का उद्भव एवं विकास

इकाई 2 - रघुवंश महाकाव्य (द्वितीय सर्ग)1-25 (दिलीप नन्दिनी संवाद)

इकाई 3 - किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग) प्रारम्भिक परिचय - 1-12 श्लोक

इकाई - 4 -किरातार्जुनीयम्- (प्रथम सर्ग 13-25)

संदर्भ ग्रंथ

1. रघुवंशम्. (2018). रघुवंशम् (सम्पा. डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी). वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।
2. किरातार्जुनीयम्. (2019). किरातार्जुनीयम् (व्याख्याकार: डॉ. श्रीनिवास शास्त्री). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस।
3. कपिलदेव द्विवेदी. (2016). संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
4. बलदेव उपाध्याय. (2017). संस्कृत साहित्य का इतिहास. वाराणसी: शारदा निकेतन।
5. रामजी उपाध्याय. (2015). संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. प्रयागराज: साहित्य भंडार।
6. सत्यव्रत शास्त्री. (2014). संस्कृत महाकाव्य की परम्परा. नई दिल्ली: भारतीय विद्या प्रकाशन।
7. आचार्य बलदेव उपाध्याय. (2018). भारतीय साहित्यशास्त्र. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
8. साहित्यदर्पण. (2012). साहित्यदर्पण (सम्पा. आचार्य शालिग्राम शास्त्री). दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।

पाठ्यक्रम परिणाम

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन उपरांत विद्यार्थी–

- संस्कृत महाकाव्य साहित्य की परम्परा एवं स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- रघुवंशम् एवं किरातार्जुनीयम् की कथावस्तु, प्रमुख प्रसंगों एवं पात्रों का सम्यक् अध्ययन कर सकेंगे।

B A SANSKRIT
Semester- 1
Paper – 1

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A1	संस्कृत महाकाव्य -1 रघुवंशम् एवं किरातार्जुनीयम्	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम संस्कृत महाकाव्य परम्परा के दो महत्वपूर्ण ग्रंथों – रघुवंशम् तथा किरातार्जुनीयम् – के अध्ययन पर आधारित है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को संस्कृत महाकाव्य साहित्य की परम्परा, काव्यगत विशेषताओं, अलंकार-योजना, रस-सौन्दर्य तथा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का ज्ञान प्राप्त होगा। कालिदास कृत *रघुवंशम्* के अध्ययन से आदर्श राजधर्म, लोकमंगल, नीति, संस्कृति एवं चरित्र-चित्रण की विशेषताओं का बोध होगा। वहीं भारवि रचित *किरातार्जुनीयम्* के अध्ययन से ओजस्वी भाषा, अर्थगौरव, नीतितत्त्व तथा वीररस की अभिव्यक्ति का ज्ञान प्राप्त होगा। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में संस्कृत काव्य-पाठ, व्याख्या, साहित्यिक विश्लेषण एवं आलोचनात्मक चिंतन की क्षमता विकसित करेगा तथा भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रति उनकी समझ को समृद्ध करेगा।

अधिगम उद्देश्य

1. काव्य एवं साहित्य के अध्ययन से भाषा, भाव एवं सौन्दर्य-बोध का विकास।
2. विद्यार्थियों में साहित्यिक अभिरुचि, कल्पनाशक्ति एवं चिंतन क्षमता वृद्धि ।
3. इससे सांस्कृतिक, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की अभिवृद्धि ।
4. काव्य एवं साहित्य की प्रमुख विधाओं एवं तत्त्वों को समझना।
5. साहित्यिक रचनाओं के भाव, शैली एवं संदेश का विश्लेषण ।

6. विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति, सौन्दर्य-बोध एवं आलोचनात्मक दृष्टि का विकास ।

पाठ्यक्रम

इकाई 1 - काव्य का उद्भव एवं विकास

इकाई 2 - रघुवंश महाकाव्य (द्वितीय सर्ग)1-25 (दिलीप नन्दिनी संवाद)

इकाई 3 - किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग) प्रारम्भिक परिचय - 1-12 श्लोक

इकाई - 4 -किरातार्जुनीयम्- (प्रथम सर्ग 13-25)

संदर्भ ग्रंथ

1. रघुवंशम्. (2018). रघुवंशम् (सम्पा. डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी). वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।
2. किरातार्जुनीयम्. (2019). किरातार्जुनीयम् (व्याख्याकार: डॉ. श्रीनिवास शास्त्री). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस।
3. कपिलदेव द्विवेदी. (2016). संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
4. बलदेव उपाध्याय. (2017). संस्कृत साहित्य का इतिहास. वाराणसी: शारदा निकेतन।
5. रामजी उपाध्याय. (2015). संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. प्रयागराज: साहित्य भंडार।
6. सत्यव्रत शास्त्री. (2014). संस्कृत महाकाव्य की परम्परा. नई दिल्ली: भारतीय विद्या प्रकाशन।
7. आचार्य बलदेव उपाध्याय. (2018). भारतीय साहित्यशास्त्र. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
8. साहित्यदर्पण. (2012). साहित्यदर्पण (सम्पा. आचार्य शालिग्राम शास्त्री). दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।

पाठ्यक्रम परिणाम

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन उपरांत विद्यार्थी–

- संस्कृत महाकाव्य साहित्य की परम्परा एवं स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- रघुवंशम् एवं किरातार्जुनीयम् की कथावस्तु, प्रमुख प्रसंगों एवं पात्रों का सम्यक् अध्ययन कर सकेंगे।

- संस्कृत महाकाव्यों में प्रयुक्त रस, छन्द, अलंकार एवं शैलीगत विशेषताओं का विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।
- भारतीय संस्कृति, नीति, धर्म एवं आदर्श जीवन-मूल्यों की समझ विकसित करेंगे।
- संस्कृत काव्य-पाठ, अनुवाद एवं व्याख्या की क्षमता विकसित करेंगे।
- महाकाव्यों में निहित दार्शनिक एवं नैतिक तत्त्वों का समकालीन संदर्भों में मूल्यांकन कर सकेंगे।
- साहित्यिक सौन्दर्यबोध एवं आलोचनात्मक दृष्टि का विकास करेंगे।

दिशा निर्देश:-

परीक्षा समय - 3 घंटा , पूर्णांक- 70

- प्रथम प्रश्न वस्तुनिष्ठ होगा जिसमें 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रत्येकं यूनिट में से 2 पूछे जाएंगें -16
- इकाई -1. 3 प्रश्नों में से 2 आलोचनात्मक प्रश्न -12
- इकाई 2 - 4 श्लोको में से 2 की सप्रसंग व्याख्या -14
- इकाई 3 - 4 श्लोको में से 2 की सप्रसंग व्याख्या -14
- इकाई - 4- चार श्लोको में से 2 की सप्रसंग व्याख्या -14

B A SANSKRIT
Semester- 1
Paper – 2

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A2	संस्कृत संभाषण तथा उच्चारण कौशल	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में संस्कृत भाषा के व्यावहारिक प्रयोग, शुद्ध उच्चारण तथा संवाद-कौशल के विकास हेतु निर्मित किया गया है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को संस्कृत वर्णमाला, स्वर एवं व्यंजन उच्चारण, संधि-विच्छेद, शब्दोच्चारण, वाक्य-रचना तथा दैनिक जीवन में प्रयुक्त संस्कृत संभाषण का अभ्यास कराया जाएगा। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी संस्कृत भाषा को आत्मविश्वासपूर्वक बोलने, पढ़ने एवं शुद्ध रूप से उच्चारित करने में सक्षम होंगे तथा संस्कृत भाषा के प्रति रुचि एवं व्यावहारिक दक्षता विकसित करेंगे।

अधिगम उद्देश्य :-

- विद्यार्थियों में संस्कृत भाषा के प्रति रुचि एवं व्यवहारिक दक्षता का विकास।
- संस्कृत वर्णों, शब्दों एवं वाक्यों के शुद्ध उच्चारण का ज्ञान।
- विद्यार्थियों को संस्कृत में सामान्य संभाषण करने योग्य बनाना।
- संस्कृत भाषा की ध्वन्यात्मक एवं व्याकरणिक विशेषताओं से परिचय।
- दैनिक जीवन में प्रयुक्त संस्कृत शब्दावली एवं संवाद शैली का अभ्यास।
- संस्कृत श्लोकों, सूक्तियों एवं वाक्यों के स्पष्ट एवं शुद्ध पाठ के कौशल का विकास।
- विद्यार्थियों में भाषिक आत्मविश्वास, वाचन-कौशल एवं अभिव्यक्ति क्षमता का विकास।

पाठ्यक्रम:

इकाई-1 (क) प्रत्याहार सूत्र एवं उच्चारण स्थान

(ख) वचन ,लिंग एवं पुरुष बोध

(ग) संख्यावाचक शब्द (1 से 100 तक)

इकाई- 2 शब्द रूप- अजन्त तीनों लिंगों में- राम, सर्व, अस्मद्, युष्मद्, तत् (तीनों लिङ्गों),

हरि, साधु, रमा, मति, श्री, वारि, दधि, मधु ।

(ख) धातु रूप - पांचों लकारों में -परस्मैपद, आत्मनेपद (लट्, लोट्, लृट्, लङ्, विधिलिङ्।

भ्वादिगण-भू, पठ्, लिख्, क्रीड्, खाद्, हस्, गम्, दृश्, नृत् ।

इकाई- 3 (क) ध्येय वाक्य राज्य एवं राष्ट्रीय संस्थान

(ख) वाक्य अशुद्धि संशोधन (विभक्ति स्वरूप)

इकाई- 4

(क)निबन्ध लेखन: पारम्परिक एवं समसामयिक निबन्ध

(ख) संस्कृत भाषा में समय बोध

संदर्भ ग्रंथ

1. संस्कृत-व्यवहार-साहस्री. (2018). संस्कृत-व्यवहार-साहस्री. बेंगलुरु: संस्कृतभारती प्रकाशन।
2. संस्कृतभारती. (2020). संभाषण संस्कृतम्. नई दिल्ली: संस्कृतभारती।
3. कपिलदेव द्विवेदी. (2016). संस्कृत भाषा शिक्षण. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
4. बलदेव उपाध्याय. (2017). संस्कृत साहित्य का इतिहास. वाराणसी: शारदा निकेतन।
5. शिक्षा-वेदाङ्ग. (2015). शिक्षा-वेदाङ्ग. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
6. पाणिनीय-शिक्षा. (2014). पाणिनीय-शिक्षा. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
7. वासुदेवशरण अग्रवाल. (2013). संस्कृत और भारतीय संस्कृति. नई दिल्ली: साहित्य अकादेमी।

8. लघुसिद्धान्तकौमुदी. (2019). लघुसिद्धान्तकौमुदी (सम्पा. महेश सिंह कुशवाहा). वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।

पाठ्यक्रम परिणाम

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन उपरांत विद्यार्थी–

- संस्कृत भाषा की वर्ण-व्यवस्था एवं शुद्ध उच्चारण पद्धति का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- संस्कृत में सामान्य वार्तालाप एवं दैनिक जीवन के संवाद करने में सक्षम होंगे।
- संस्कृत शब्दों, श्लोकों एवं वाक्यों का शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण कर सकेंगे।
- स्वर, व्यंजन, मात्रा, संधि एवं ध्वनि-विज्ञान के मूलभूत सिद्धांतों को समझ सकेंगे।
- संस्कृत संभाषण में प्रयुक्त सामान्य शब्दावली एवं वाक्यरचना का प्रयोग कर सकेंगे।
- संस्कृत भाषा के प्रति आत्मविश्वास, भाषिक दक्षता एवं अभिव्यक्ति-कौशल विकसित करेंगे।
- वैदिक एवं लौकिक संस्कृत उच्चारण की मूलभूत विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- संस्कृत भाषा के व्यावहारिक एवं सांस्कृतिक महत्व को समझ सकेंगे।

दिशा-निर्देश:

परीक्षा समय - 3 घंटा , पूर्णांक- 70

- प्रथम प्रश्न वस्तुनिष्ठ होगा जिसमें 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रत्येकं यूनिट में से 2 पूछे जाएंगें -16
- इकाई- 1 (क) चार में से किन्हीं दो प्रत्याहारों का विवरण -06
  उच्चारण स्थान एवं वचन, लिंग, पुरुष से सम्बन्धित चार प्रश्नों में से कोई दो प्रश्न -06
  संस्कृत में संख्या वाचक शब्द 08
- इकाई- 2 (क) आठ में से किन्ही चार शब्दों के संपूर्ण शब्द रूप -05
  चार में से किन्हीं दो धातुओं के निर्दिष्ट लकार में संपूर्ण रूप -05
- इकाई- 3 (क) ध्येय वाक्य राष्ट्रीय संस्थानों के (चार में से कोई दो) - 04
  (ख) आठ वाक्य में से चार वाक्य में अशुद्धि संशोधन - 04
- इकाई - 4(क) चार में से किन्ही एक पर निवन्ध लेखन - 08
  (ख) संस्कृत भाषा में समय सारणी -08

B A SANSKRIT
Semester- 1
Paper - 3

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Cre dits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A3	संस्कृत कथा साहित्य - पञ्चतन्त्रम्	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम संस्कृत कथा साहित्य की समृद्ध परम्परा तथा पञ्चतन्त्रम् के अध्ययन पर आधारित है। *पञ्चतन्त्रम्* भारतीय नीति, व्यवहारिक ज्ञान, नैतिक शिक्षा तथा लोकजीवन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को संस्कृत कथा साहित्य की उत्पत्ति, विकास, शैली तथा कथात्मक विशेषताओं का परिचय प्राप्त होगा। पाठ्यक्रम में *पञ्चतन्त्रम्* की प्रमुख कथाओं के अध्ययन द्वारा नीति, मित्रता, कर्तव्य, बुद्धिमत्ता, नेतृत्व, सामाजिक व्यवहार तथा व्यावहारिक जीवन-मूल्यों का ज्ञान कराया जाएगा। साथ ही विद्यार्थियों को कथा-पाठ, अनुवाद, व्याख्या एवं साहित्यिक विश्लेषण की विधियों से भी परिचित कराया जाएगा।

अधिगम उद्देश्य:-

- विद्यार्थियों का संस्कृत कथा साहित्य की परम्परा एवं स्वरूप से परिचय।
- पञ्चतन्त्रम् की कथाओं के माध्यम से नैतिक एवं व्यवहारिक शिक्षा।
- विद्यार्थियों में संस्कृत गद्य-पाठ एवं व्याख्या कौशल का विकास।
- नीति, नेतृत्व, मित्रता एवं सामाजिक व्यवहार संबंधी मूल्यों की समझ का विकास
- विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा की कथात्मक शैली एवं अभिव्यक्ति से परिचय
- कथा-साहित्य के माध्यम से तार्किक एवं आलोचनात्मक चिंतन क्षमता का विकास।
- भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान परम्परा के मूल तत्वों का ज्ञान।

पाठ्यक्रम:

इकाई- 1 संस्कृत कथा साहित्य का इतिहास

इकाई- 2 'पंचतन्त्र' के प्रथम तन्त्र 'मित्रभेद' से संग्रहित कथाएँ

- बुद्धिर्यस्य बलं तस्य, नाऽशिष्यायोपदिश्यते,
- नीलवर्णःश्रृगालः, शशकस्य चातुर्यम्,
- दुर्जनसंगो भयावहः, मैत्री पुनस्त्वीदृशी,
- पराधिकारचर्चा परिवर्जयेत्, सुन्दोपसुन्दकथा,

इकाई- 3 पञ्चतन्त्र के "अपरिक्षितकारकम्" से (प्रारम्भिक 6 कथाएँ)

इकाई- 4 विष्णु शर्मा,नारायण पण्डित, बृहद्कथा और विष्णुगुप्त का सामान्य परिचय ।

संदर्भ ग्रंथ:

1. पञ्चतन्त्रम्. (2018). पञ्चतन्त्रम् (सम्पा. डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी). वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।
2. विष्णुशर्मा. (2016). पञ्चतन्त्रम् (हिंदी व्याख्यासहित). दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
3. हितोपदेश. (2017). हितोपदेश. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस।
4. बलदेव उपाध्याय. (2017). संस्कृत साहित्य का इतिहास. वाराणसी: शारदा निकेतन।
5. कपिलदेव द्विवेदी. (2015). संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
6. रामजी उपाध्याय. (2014). संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. प्रयागराज: साहित्य भंडार।
7. कथासरित्सागर. (2013). कथासरित्सागर. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
8. संस्कृत गद्य साहित्य. (2019). संस्कृत गद्य साहित्य. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।

पाठ्यक्रम परिणाम

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन उपरांत विद्यार्थी–

- संस्कृत कथा साहित्य की विशेषताओं एवं परम्परा का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

- पञ्चतन्त्रम् की प्रमुख कथाओं, पात्रों एवं नीति-सिद्धांतों को समझ सकेंगे।
- संस्कृत गद्यांशों का सरल अनुवाद एवं व्याख्या करने में सक्षम होंगे।
- कथा-साहित्य में निहित नैतिक, सामाजिक एवं व्यवहारिक मूल्यों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- संस्कृत भाषा की कथात्मक शैली एवं अभिव्यक्ति-कौशल में दक्षता प्राप्त करेंगे।
- तार्किक चिंतन, निर्णय क्षमता एवं जीवनोपयोगी दृष्टिकोण का विकास करेंगे।
- भारतीय संस्कृति, नीति एवं लोकज्ञान की परम्परा को समझ सकेंगे।

दिशा निर्देश:-

परीक्षा समय - 3 घंटा , पूर्णांक- 70

- प्रथम प्रश्न वस्तुनिष्ठ होगा जिसमें 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रत्येकं यूनिट में से 2 पूछे जाएंगें -16
- इकाई -1 दो प्रश्नों में से एक आलोचनात्मक प्रश्न 10
- इकाई 2 - चार श्लोकों/गद्यांशों में से 2 की सप्रसंग व्याख्या 10
- इकाई 3 - चार श्लोकों/गद्यांशों में से 2 की सप्रसंग व्याख्या 10
- इकाई - 4- दो प्रश्नों में से एक आलोचनात्मक प्रश्न 10
- चारों इकाईयों मे से किन्हीं दो विषयों पर विस्तृत टिप्पणी -14

B A SANSKRIT
Semester- 2
Paper – 1

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Cre dits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A4	संस्कृत नाटक एवं छन्द	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण

इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत संस्कृत नाट्य साहित्य की प्रमुख कृति *स्वप्नवासवदत्तम्* तथा संस्कृत छन्दशास्त्र का अध्ययन कराया जाएगा। विद्यार्थियों को नाटक की कथावस्तु, पात्र-चित्रण, नाट्य-शिल्प, रस एवं अलंकारों का ज्ञान प्रदान किया जाएगा। साथ ही संस्कृत नाट्य परंपरा एवं भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का परिचय कराया जाएगा।

छन्द भाग में विद्यार्थियों को संस्कृत छन्दों की उत्पत्ति, विकास, वर्णिक एवं मात्रिक छन्दों की संरचना, गण-विन्यास तथा प्रमुख छन्दों – अनुष्टुप्, वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित, मन्दाक्रान्ता आदि – का अध्ययन कराया जाएगा। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में संस्कृत भाषा, काव्य-पाठ, उच्चारण, लय एवं साहित्यिक सौंदर्य-बोध का विकास किया जाएगा।

अधिगम उद्देश्य :-

- विद्यार्थियों का संस्कृत नाट्य साहित्य एवं छन्दशास्त्र की मूल अवधारणाओं से परिचय।
- स्वप्नवासवदत्तम् की कथावस्तु, पात्र एवं नाट्य-तत्त्वों का ज्ञान।
- संस्कृत छन्दों की संरचना एवं प्रयोग की समझ का विकास।
- विद्यार्थियों में संस्कृत वाचन, संवाद, उच्चारण एवं अभिनय कौशल का विकास।
- रस, अलंकार, लय एवं काव्य-सौंदर्य के प्रति रुचि।
- भारतीय सांस्कृतिक, नैतिक एवं साहित्यिक परंपराओं के प्रति जागरूकता।

पाठ्यक्रम:

इकाई- 1 नाट्य साहित्य का इतिहास

इकाई- 2 स्वप्नवासवदत्तम् 1 - 4 अंक

इकाई- 3 स्वप्नवासवदत्तम् 5 -6 अंक

इकाई- 4 छन्दांसि - अनुष्टुप्, आर्या, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, वंशस्थ, शिखरिणी, स्रग्धरा, वसन्ततिलका, मन्दाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीडितम् ।

संदर्भ ग्रंथ

1. भास (2018). स्वप्नवासवदत्तम् (सम्पा. हरिदत्त शास्त्री). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
2. कपिलदेव द्विवेदी (2016). संस्कृत नाट्य साहित्य का इतिहास. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
3. बलदेव उपाध्याय (2014). संस्कृत साहित्य का इतिहास. वाराणसी: शारदा निकेतन।
4. रामजी उपाध्याय (2017). संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन।
5. पाण्डेय, रमाशंकर (2015). छन्दशास्त्र का परिचय. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
6. केदारनाथ शर्मा (2012). संस्कृत छन्द एवं पिंगलशास्त्र. जयपुर: साहित्यागार।
7. पिंगलाचार्य (2011). पिंगल छन्दःसूत्रम् (व्याख्यासहित). वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
8. सत्यव्रत शास्त्री। (2018). संस्कृत काव्यशास्त्र एवं छन्द. नई दिल्ली: भारतीय विद्या प्रकाशन।

अधिगम उपलब्धि

- विद्यार्थी संस्कृत नाट्य साहित्य एवं छन्दशास्त्र की मूल विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- *स्वप्नवासवदत्तम्* की कथावस्तु, पात्र-चित्रण एवं नाट्य-शिल्प का विश्लेषण कर सकेंगे।
- विद्यार्थी विभिन्न संस्कृत छन्दों की पहचान एवं उनका प्रयोग करने में सक्षम होंगे।
- संस्कृत श्लोकों एवं संवादों का शुद्ध उच्चारण एवं लय के साथ पाठ कर सकेंगे।
- संस्कृत काव्य एवं नाटकों के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक महत्व का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- विद्यार्थियों में साहित्यिक अभिरुचि, सौंदर्य-बोध एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति का विकास होगा।

दिशा निर्देश:-

परीक्षा समय - 3 घंटा , पूर्णांक- 70

- प्रथम प्रश्न वस्तुनिष्ठ होगा जिसमें 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रत्येक यूनिट में से 2 पूछे जाएंगें 16
- इकाई -1. 4 में से 2 की सप्रसंग व्याख्या 10

- इकाई 2 - 4 में से 2 की सप्रसंग व्याख्या 10
- इकाई 3 - 4 में से 2 की सप्रसंग व्याख्या 10
- इकाई 4. 4 छन्दों में से 2 का लक्षण सहित उदाहरण 10
- चारों इकाईयों मे से किन्हीं दो विषयों पर विस्तृत टिप्पणी -14

B A SANSKRIT
Semester- 2
Paper - 2

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A5	संस्कृत व्याकरण-1	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण

इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत संस्कृत व्याकरण की आधारभूत संकल्पनाओं का अध्ययन कराया जाएगा। मुख्य रूप से *लघुसिद्धान्तकौमुदी* के माध्यम से स्त्रीप्रत्यय, कृदन्त, संज्ञा तथा शब्दरूपों का व्याकरणिक अध्ययन कराया जाएगा। विद्यार्थियों को शब्द-निर्माण प्रक्रिया, धातु एवं प्रत्ययों के प्रयोग, संज्ञा-भेद तथा विभिन्न लिंगों के शब्दरूपों का अभ्यास कराया जाएगा।

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में संस्कृत भाषा की शुद्धता, व्याकरणिक विश्लेषण क्षमता तथा भाषिक अभिव्यक्ति का विकास किया जाएगा। साथ ही संस्कृत वाक्य-रचना एवं व्याकरणिक प्रयोगों की व्यावहारिक समझ विकसित की जाएगी।

अधिगम उद्देश्य:

- विद्यार्थियों को संस्कृत व्याकरण की मूल अवधारणाओं का परिचय।
- लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित स्त्रीप्रत्ययों एवं कृदन्तों का ज्ञान
- संज्ञा एवं शब्दरूपों की संरचना और प्रयोग की समझ का विकास।
- विद्यार्थियों में संस्कृत भाषा के शुद्ध प्रयोग की क्षमता का विकास।
- व्याकरणिक विश्लेषण एवं भाषिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास।
- संस्कृत वाक्य-निर्माण एवं अनुवाद क्षमता का विकास।

पाठ्यक्रम:

इकाई- 1 संज्ञा प्रकरण (लघुसिद्धान्तकौमुदी)

इकाई- 2

(क) **शब्द रूप**-राम, कवि, भानु, पितृ, लता, नदी, मति, धेनू, वधू, मातृ, फल, वारि, मधु ।

(ख) **धातुरूप** - परस्मैपद - भू,,पठ्, हस्, नम्, गम्, अस्,हन्, क्रुध्, नश्, नृत्, अद्,इष्, पृच्छ्, चिन्त्।

इकाई- 3

(क) **कृदन्त प्रत्यय**-क्त, क्तवतु, क्त्वा, ण्यत्, तुमुन्, शतृ, शानच्, यत्, तव्यत्, अनीयर् ।

इकाई- 4

स्त्री-प्रत्यय प्रकरण

संदर्भ ग्रंथ

1. वरदराज। (2018). लघुसिद्धान्तकौमुदी (सम्पा. महेश सिंह कुशवाहा). वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।
2. भट्टोजि दीक्षित। (2016). सिद्धान्तकौमुदी. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
3. वासुदेव दीक्षित। (2015). संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका. नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
4. कपिलदेव द्विवेदी। (2017). संस्कृत व्याकरण एवं भाषा-विज्ञान. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
5. रामचन्द्र झा। (2014). संस्कृत व्याकरण कौमुदी. पटना: भारती भवन।
6. सत्यनारायण शास्त्री। (2013). कृदन्तप्रकरणम्. जयपुर: साहित्यागार।
7. पाणिनि। (2011). अष्टाध्यायी (हिन्दी व्याख्यासहित). वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
8. हरिदत्त शास्त्री। (2019). संस्कृत शब्दरूप एवं धातुरूप परिचय. दिल्ली: भारतीय विद्या प्रकाशन।

अधिगम उपलब्धियाँ :-

- विद्यार्थी संस्कृत व्याकरण की मूल संकल्पनाओं को समझ सकेंगे।
- स्त्रीप्रत्ययों एवं कृदन्तों का सही प्रयोग करने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी विभिन्न संज्ञाओं एवं शब्दरूपों की पहचान एवं प्रयोग कर सकेंगे।

- संस्कृत भाषा में शुद्ध वाक्य-रचना एवं व्याकरणिक प्रयोग कर सकेंगे।
- विद्यार्थियों में संस्कृत पठन, लेखन एवं अनुवाद कौशल का विकास होगा।
- संस्कृत व्याकरण के आधार पर भाषिक एवं साहित्यिक विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।

दिशा निर्देश:-

परीक्षा समय - 3 घंटा , पूर्णांक- 70

- प्रथम प्रश्न वस्तुनिष्ठ होगा जिसमें 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रत्येकं यूनिट में से 2 पूछे जाएंगें 16
- इकाई- 1, 10 में से किन्हीं पाँच प्रत्याहारों का विवरण 10
- इकाई- 2, (क) चार शब्दों में से किन्हीं दो शब्दों के संपूर्ण रूप 10
- (ख) 4 धातुओं में से किन्हीं 2 धातुओं के पूछे गए 2 लकारों में संपूर्ण रूप 10
- इकाई- 3 10 में से किन्हीं पांच में प्रकृति प्रत्यय प्रदर्शन 10
- इकाई- 4 चार में से किन्ही दो स्त्रीप्रत्ययों के लक्षण एवं उदाहरण 14

B A SANSKRIT
Semester- 2
Paper - 3

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Cre dits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A6	संस्कृत महाकाव्य- 2 बुद्धचरित एवं सौन्दरनन्द	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण

इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत संस्कृत महाकाव्य साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियों बुद्धचरित एवं सौन्दरनन्द का अध्ययन कराया जाएगा। इन ग्रंथों के माध्यम से भगवान बुद्ध के जीवन, उपदेश, वैराग्य, करुणा एवं बौद्ध दर्शन के मूल सिद्धांतों का परिचय कराया जाएगा। विद्यार्थियों को महाकाव्य की कथावस्तु, पात्र-चित्रण, काव्य-सौंदर्य, भाषा-शैली, रस, अलंकार तथा दार्शनिक तत्त्वों का अध्ययन कराया जाएगा।

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में संस्कृत महाकाव्य परंपरा की समझ, साहित्यिक विश्लेषण क्षमता एवं नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता विकसित की जाएगी। साथ ही अश्वघोष की काव्य-प्रतिभा एवं संस्कृत साहित्य में उनके योगदान का अध्ययन भी कराया जाएगा।

अधिगम उद्देश्य :-

- विद्यार्थियों का संस्कृत महाकाव्य साहित्य की परंपरा से परिचय।
- बुद्धचरित एवं सौन्दरनन्द की कथावस्तु एवं दार्शनिक पक्ष का ज्ञान।
- बौद्ध दर्शन, वैराग्य एवं नैतिक मूल्यों की समझ का विकास।
- महाकाव्यों में प्रयुक्त रस, अलंकार एवं काव्य-शैली का अध्ययन।
- विद्यार्थियों में साहित्यिक विश्लेषण एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास।

- संस्कृत भाषा एवं काव्य-पाठ के प्रति रुचि।

पाठ्यक्रम:

इकाई- 1 महाकवि अश्वघोष- व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व

इकाई- 2 बुद्धचरितम्, (प्रथम सर्ग- 1-25)

इकाई- 3 बुद्धचरितम् (प्रथम सर्ग 26-50)

इकाई- 4 सौन्दरनन्द (पञ्चम सर्ग)

संदर्भ ग्रंथ

1. अश्वघोष। (2018). बुद्धचरितम् (सम्पा. सूर्यनारायण चौधरी). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
2. अश्वघोष। (2017). सौन्दरनन्दम् (सम्पा. हरिप्रसाद शास्त्री). वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
3. बलदेव उपाध्याय। (2014). संस्कृत साहित्य का इतिहास. वाराणसी: शारदा निकेतन।
4. कपिलदेव द्विवेदी। (2016). संस्कृत महाकाव्य परंपरा और विकास. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
5. रामजी उपाध्याय। (2015). संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन।
6. गोविन्दचन्द्र पाण्डेय। (2013). बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास. नई दिल्ली: हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय।
7. सत्यव्रत शास्त्री। (2018). संस्कृत काव्यशास्त्र के तत्व. नई दिल्ली: भारतीय विद्या प्रकाशन।
8. राहुल सांकृत्यायन। (2012). बौद्ध दर्शन. इलाहाबाद: किताब महल।

अधिगम उपलब्धियाँ :-

- विद्यार्थी संस्कृत महाकाव्य साहित्य की विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- बुद्धचरित एवं सौन्दरनन्द की कथावस्तु एवं पात्रों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- विद्यार्थी बौद्ध दर्शन एवं नैतिक मूल्यों की व्याख्या करने में सक्षम होंगे।
- महाकाव्यों में प्रयुक्त रस, अलंकार एवं भाषा-शैली की पहचान कर सकेंगे।

- संस्कृत काव्य के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक महत्व का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- विद्यार्थियों में संस्कृत पठन, व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन की क्षमता विकसित होगी।

दिशा निर्देश:-

परीक्षा समय - 3 घंटा , पूर्णांक- 70

- प्रथम प्रश्न वस्तुनिष्ठ होगा जिसमें 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रत्येकं यूनिट में से 2 पूछे जाएंगें -16
- इकाई 1. 2 प्रश्नों में से 1 आलोचनात्मक प्रश्न 10
- इकाई 2 - 4 श्लोको में से 2 की सप्रसंग व्याख्या 10
- इकाई 3 - 4 श्लोको में से 2 की सप्रसंग व्याख्या 10
- इकाई 4 - 4 श्लोको में से 2 की सप्रसंग व्याख्या 10
- चारों इकाईयों मे से किन्हीं दो विषयों पर विस्तृत टिप्पणी -14

B A SANSKRIT
Semester- 3
Paper – 1

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A7	आधुनिक संस्कृत साहित्य- शिवराजविजयम्	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण

इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत आधुनिक संस्कृत साहित्य की महत्वपूर्ण कृति शिवराजविजयम् का अध्ययन कराया जाएगा। इस ग्रंथ के माध्यम से आधुनिक संस्कृत गद्य साहित्य, राष्ट्रीय चेतना, वीरता, नेतृत्व एवं भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का परिचय कराया जाएगा। विद्यार्थियों को छत्रपति शिवाजी के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं राष्ट्रनिर्माण में उनके योगदान का अध्ययन कराया जाएगा।
पाठ्यक्रम में ग्रंथ की कथावस्तु, भाषा-शैली, चरित्र-चित्रण, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं साहित्यिक विशेषताओं का विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही आधुनिक संस्कृत साहित्य के विकास एवं उसमें राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति का अध्ययन भी कराया जाएगा।

अधिगम उद्देश्य :-

- आधुनिक संस्कृत साहित्य की प्रवृत्तियों एवं विशेषताओं का परिचय।
- शिवराजविजयम् की कथावस्तु एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का ज्ञान।
- विद्यार्थियों में राष्ट्रप्रेम, नेतृत्व एवं नैतिक मूल्यों की भावना का विकास।
- आधुनिक संस्कृत गद्य की भाषा-शैली एवं साहित्यिक सौंदर्य की समझ का विकास।
- साहित्यिक विश्लेषण एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास
- संस्कृत साहित्य के आधुनिक स्वरूप एवं उसके सामाजिक महत्व का परिचय।

पाठ्यक्रम:

इकाई- 1 अम्बिकादत्त व्यास कृत शिवराजविजय (प्रथम निःश्वास - आरम्भ से-कथ्यताम् का दशा भारतवर्षस्य तक)

इकाई- 2 अम्बिकादत्त व्यास कृत शिवराजविजय (प्रथम निःश्वास - शेष भाग)

इकाई- 3 आधुनिक संस्कृत साहित्य परिचय

इकाई- 4 चयनित साहित्यकार-

मथुरा प्रसाद दीक्षित, रामकरण शर्मा, बाबूराम अवस्थी, श्रीनिवास रथ , डॉ० रमाकांत शुक्ल, डॉ० रामजी उपाध्याय, राधाबल्लभ त्रिपाठी, प्रो० (अभिराज) राजेन्द्र मिश्र,

संदर्भ ग्रंथ

1. अम्बिकादत्त व्यास। (2018). शिवराजविजयम्. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
2. बलदेव उपाध्याय। (2014). आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास. वाराणसी: शारदा निकेतन।
3. कपिलदेव द्विवेदी। (2016). संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
4. रामजी उपाध्याय। (2015). संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन।
5. सत्यव्रत शास्त्री। (2018). आधुनिक संस्कृत साहित्य की प्रवृत्तियाँ. नई दिल्ली: भारतीय विद्या प्रकाशन।
6. वाचस्पति गैरोला। (2013). संस्कृत साहित्य एवं समीक्षा. इलाहाबाद: किताब महल।
7. हजारीप्रसाद द्विवेदी। (2011). भारतीय साहित्य की भूमिका. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
8. शिवाजी सावंत। (2012). छत्रपति शिवाजी का जीवन और आदर्श. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।

अधिगम उपलब्धियाँ :-

- विद्यार्थी आधुनिक संस्कृत साहित्य की प्रमुख विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- शिवराजविजयम् की कथावस्तु, पात्र एवं ऐतिहासिक संदर्भों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- विद्यार्थी राष्ट्रवाद एवं सांस्कृतिक मूल्यों की साहित्यिक अभिव्यक्ति को समझ सकेंगे।

- आधुनिक संस्कृत गद्य की भाषा-शैली एवं साहित्यिक विशेषताओं की पहचान कर सकेंगे।
- विद्यार्थियों में संस्कृत पठन, व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन की क्षमता विकसित होगी।
- आधुनिक संस्कृत साहित्य के सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व का मूल्यांकन करने में सक्षम होंगे।

दिशा निर्देश:-

परीक्षा समय - 3 घंटा , पूर्णांक- 70

- प्रथम प्रश्न वस्तुनिष्ठ होगा जिसमें 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रत्येकं यूनिट में से 2 पूछे जाएंगें 16
- इकाई- 1 में से 4 गद्यांशों में से 2 की ससन्दर्भ व्याख्या 10
- इकाई- 1 में से 2 में से कोई 1 आलोचनात्मक प्रश्न 06
- इकाई- 2 में से 4 गद्यांशों में से 2 की ससन्दर्भ व्याख्या 10
- इकाई- 2 में से 2 में से कोई 1 आलोचनात्मक प्रश्न 06
- इकाई- 3 में से 2 में से कोई 1 आलोचनात्मक प्रश्न 10
- इकाई- 4 में से किन्ही 4 नाट्यकारों में से 2 पर टिप्पणी कीजिए 12

B A SANSKRIT
Semester- 3
Paper - 2

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A8	**संस्कृत गद्यसाहित्य** शुकनासोपदेश	**Revised**	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण

इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत संस्कृत गद्य साहित्य की महत्वपूर्ण रचना *शुकनासोपदेश* का अध्ययन कराया जाएगा। इसमें गद्यकाव्य की विशेषताओं, भाषा-शैली, अलंकार, भाव-सौंदर्य एवं नीति-तत्त्वों का विवेचन किया जाएगा। विद्यार्थियों को *शुकनासोपदेश* में निहित नैतिक, सामाजिक एवं राजनैतिक विचारों से परिचित कराया जाएगा।

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में संस्कृत गद्य साहित्य की समझ, भाषिक दक्षता एवं साहित्यिक अभिरुचि का विकास किया जाएगा। साथ ही बाणभट्ट की गद्य-शैली, वर्णन-कौशल एवं साहित्यिक प्रतिभा का अध्ययन भी कराया जाएगा।

अधिगम उद्देश्य

- विद्यार्थियों का संस्कृत गद्य साहित्य की परंपरा एवं विशेषताओं से परिचय।
- शुकनासोपदेश की विषयवस्तु एवं नीति-तत्त्वों का ज्ञान।
- संस्कृत गद्य की भाषा-शैली एवं अलंकारिक सौंदर्य की समझ का विकास।
- विद्यार्थियों में नैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता।
- संस्कृत गद्य के अध्ययन के माध्यम से भाषिक एवं साहित्यिक दक्षता।
- विद्यार्थियों में विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास।

पाठ्यक्रम

इकाई- 1 . गद्य साहित्य का उद्भव एवं विकास

इकाई- 2 दण्डी एवं बाण भट्ट - (व्यक्तित्व एवं कृतित्व)

इकाई- 3 शुकनासोपदेश (लक्ष्मी वर्णन)

इकाई- 4 शुकनासोपदेश (शेष भाग)

संदर्भ ग्रंथ

1. बाणभट्ट। (2018). कादम्बरी (शुकनासोपदेश सहित) (सम्पा. हरगोविन्द शास्त्री). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
2. बाणभट्ट। (2016). शुकनासोपदेशः (व्याख्यासहित). दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
3. बलदेव उपाध्याय। (2014). संस्कृत साहित्य का इतिहास. वाराणसी: शारदा निकेतन।
4. कपिलदेव द्विवेदी। (2017). संस्कृत गद्य साहित्य का विकास. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
5. रामजी उपाध्याय। (2015). संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन।
6. सत्यव्रत शास्त्री। (2018). संस्कृत काव्यशास्त्र के तत्व. नई दिल्ली: भारतीय विद्या प्रकाशन।
7. वाचस्पति गैरोला। (2013). संस्कृत साहित्य एवं समीक्षा. इलाहाबाद: किताब महल।
8. हजारीप्रसाद द्विवेदी। (2011). भारतीय साहित्य की भूमिका. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

अधिगम उपलब्धि :-

- विद्यार्थी संस्कृत गद्य साहित्य की मूल विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- शुकनासोपदेश की विषयवस्तु एवं नीति-सिद्धांतों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- विद्यार्थी संस्कृत गद्य की भाषा-शैली एवं अलंकारों की पहचान कर सकेंगे।
- संस्कृत गद्य के माध्यम से नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को आत्मसात कर सकेंगे।
- विद्यार्थियों में संस्कृत पठन, व्याख्या एवं भाषिक अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित होगी।
- संस्कृत साहित्य के गद्य पक्ष के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक महत्व का मूल्यांकन कर सकेंगे।

दिशा निर्देश:-

परीक्षा समय - 3 घंटा , पूर्णांक- 70

- प्रथम प्रश्न वस्तुनिष्ठ होगा जिसमें 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रत्येक यूनिट में से 2 पूछे जाएंगें -16
- इकाई -1 में से 2 प्रश्नों में से 1 आलोचनात्मक प्रश्न-10
- इकाई 2 में से 2 प्रश्नों में से 1 आलोचनात्मक प्रश्न -10
- इकाई 3 में से 4 गद्यांशो में से 2 की व्याख्या -10
- इकाई 4 में से 4 गद्यांशो में से 2 की व्याख्या -10
- चारों इकाईयों मे से किन्हीं दो विषयों पर विस्तृत टिप्पणी -14

B A SANSKRIT
Semester- 3
Paper - 3

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A9	**उपनिषद् परिचय**	Revised	2	1	-	2	1	-	3	25	50	-	-	75

पाठ्यक्रम विवरण

इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत उपनिषद् साहित्य का सामान्य परिचय, भारतीय दर्शन में उपनिषदों का स्थान तथा उनके दार्शनिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व का अध्ययन कराया जाएगा। विद्यार्थियों को प्रमुख उपनिषदों – ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य एवं बृहदारण्यक आदि – की मूल अवधारणाओं से परिचित कराया जाएगा।

पाठ्यक्रम में ब्रहम, आत्मा, जगत्, मोक्ष, ज्ञान, कर्म एवं उपासना जैसे दार्शनिक सिद्धांतों का अध्ययन किया जाएगा। साथ ही उपनिषदों में निहित नैतिक मूल्यों, मानव जीवन-दृष्टि एवं भारतीय संस्कृति पर उनके प्रभाव का विवेचन भी कराया जाएगा।

अधिगम उद्देश्य :-

- उपनिषद् साहित्य की मूल अवधारणाओं से का परिचय
- भारतीय दर्शन एवं संस्कृति में उपनिषदों के महत्व को समझाना।
- ब्रहम, आत्मा, मोक्ष एवं ज्ञान संबंधी दार्शनिक सिद्धांतों की समझ का विकास।
- विद्यार्थियों में आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना।
- उपनिषदों की भाषा, शैली एवं दार्शनिक अभिव्यक्ति का अध्ययन कराना।
- विद्यार्थियों में विश्लेषणात्मक एवं चिंतनशील दृष्टिकोण का विकास करना।

पाठ्यक्रम:

इकाई- 1 उपनिषदों का सामान्य परिचय

उपनिषदों का वर्ण्यविषय- ब्रह्म, आत्मा, ज्ञान, जीव, मोक्ष

इकाई- 2 प्रथम अध्याय (कठोपनिषद)- प्रथम वल्ली एवं द्वितीय वल्ली (प्रथम अध्याय)।

इकाई- 3 ईशोपनिषद् (सम्पूर्ण)

इकाई-4 : केनोपनिषद् एवं मुण्डकोपनिषद

(क) केनोपनिषद्

ब्रह्म की अवधारणा
ज्ञान एवं इन्द्रियों का संबंध
यक्ष आख्यान का अध्ययन

(ख) मुण्डकोपनिषद्

परा एवं अपरा विद्या
ब्रह्मज्ञान का महत्व
साधना एवं मोक्ष

संदर्भ ग्रंथ

1. ईशोपनिषद्. (2016). वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
2. कठोपनिषद्. (2015). दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
3. राधाकृष्णन, एस. (2012). भारतीय दर्शन (भाग-1). नई दिल्ली: राजपाल एंड सन्स।
4. बलदेव उपाध्याय। (2014). भारतीय दर्शन. वाराणसी: शारदा निकेतन।
5. हिरियन्ना, एम. (2011). भारतीय दर्शन की रूपरेखा. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
6. दासगुप्त, सुरेन्द्रनाथ। (2013). भारतीय दर्शन का इतिहास. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
7. स्वामी गंभीरानन्द। (2017). उपनिषद् संग्रह. कोलकाता: अद्वैत आश्रम।
8. चन्द्रधर शर्मा। (2016). भारतीय दर्शन : आलोचन और अनुशीलन. नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
9. गीता प्रेस। (सं.). ईश, केन, कठ, मुण्डक एवं तैत्तिरीय उपनिषद्. गोरखपुर: गीता प्रेस।

अधिगम परिणाम

- विद्यार्थी उपनिषद् साहित्य की मूल विशेषताओं एवं महत्व को समझ सकेंगे।
- प्रमुख उपनिषदों के दार्शनिक सिद्धांतों का विश्लेषण कर सकेंगे।

- विद्यार्थी ब्रह्म, आत्मा, मोक्ष एवं ज्ञान संबंधी अवधारणाओं की व्याख्या कर सकेंगे।
- भारतीय संस्कृति एवं दर्शन पर उपनिषदों के प्रभाव को समझ सकेंगे।
- विद्यार्थियों में नैतिक, आध्यात्मिक एवं चिंतनशील दृष्टिकोण का विकास होगा।
- उपनिषदों के साहित्यिक एवं दार्शनिक महत्व का मूल्यांकन करने में सक्षम होंगे।

दिशा निर्देश :

परीक्षा समय - 3 घंटा , पूर्णांक- 70

- प्रथम प्रश्न वस्तुनिष्ठ होगा जिसमें 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रत्येकं यूनिट में से 2 पूछे जाएंगें -16
- इकाई- 1 चार में दो आलोचनात्मक प्रश्नों की व्याख्या- 14
- इकाई- 2 चार में से दो मंत्रों की व्याख्या 10
- इकाई- 3 चार में से दो मंत्रों की व्याख्या 10
- इकाई- 4 (क) चार में से दो मंत्रों की व्याख्या 10
- इकाई- 4 (ख) चार में से दो मंत्रों की व्याख्या 10

B A SANSKRIT
Semester- 4
Paper - 1

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A10	संस्कृत व्याकरण -2	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण

इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत संस्कृत व्याकरण की प्रमुख संकल्पनाओं – संज्ञा, समास, सन्धि एवं व्याकरण के इतिहास – का अध्ययन कराया जाएगा। विद्यार्थियों को व्याकरण की आधारभूत संरचना, शब्द-निर्माण प्रक्रिया, सन्धियों के प्रकार, समासों के भेद तथा उनके प्रयोग का ज्ञान प्रदान किया जाएगा। साथ ही संस्कृत व्याकरण की ऐतिहासिक परंपरा, पाणिनि एवं अन्य वैयाकरणों के योगदान तथा भारतीय भाषाशास्त्र के विकास का अध्ययन भी कराया जाएगा।

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में संस्कृत भाषा की शुद्धता, व्याकरणिक विश्लेषण क्षमता एवं भाषिक अभिव्यक्ति का विकास किया जाएगा। साथ ही संस्कृत वाक्य-रचना एवं साहित्य अध्ययन के लिए आवश्यक व्याकरणिक आधार तैयार किया जाएगा।

अधिगम उद्देश्य :-

- संस्कृत व्याकरण की मूल अवधारणाओं का परिचय
- संज्ञा, सन्धि एवं समास के नियमों एवं प्रयोगों का ज्ञान।
- विद्यार्थियों में शुद्ध संस्कृत भाषा प्रयोग की क्षमता का विकास।
- संस्कृत व्याकरण की ऐतिहासिक परंपरा एवं प्रमुख वैयाकरणों के योगदान का अध्ययन।
- व्याकरणिक विश्लेषण एवं भाषिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास
- संस्कृत वाक्य-निर्माण एवं अनुवाद क्षमता कौशल का विकास

पाठ्यक्रम:

इकाई- 1 संज्ञा प्रकरण (लघुसिद्धान्तकौमुदी)

इकाई- 2 अच्, हल्, विसर्ग सन्धि, (सूत्र-व्याख्या एवं सूत्र-निर्देशपूर्वक सन्धि एवं सन्धि-विग्रह)

इकाई -3 समास प्रकरण - अव्ययीभावसमास, तत्पुरूषसमास, बहुव्रीहिसमास, द्वन्द्वसमास ।

इकाई- 4 व्याकरण-शास्त्र का इतिहास

संदर्भ ग्रंथ

1. पाणिनि। (2011). अष्टाध्यायी (हिन्दी व्याख्यासहित). वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
2. भट्टोजि दीक्षित। (2016). सिद्धान्तकौमुदी. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
3. वरदराज। (2018). लघुसिद्धान्तकौमुदी. वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।

4. कपिलदेव द्विवेदी। (2017). संस्कृत व्याकरण एवं भाषा-विज्ञान. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
5. वासुदेव दीक्षित। (2015). संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका. नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
6. सत्यनारायण शास्त्री। (2014). समास एवं सन्धि प्रकरणम्. जयपुर: साहित्यागार।
7. युधिष्ठिर मीमांसक। (2013). संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
8. रामचन्द्र झा। (2012). संस्कृत व्याकरण कौमुदी. पटना: भारती भवन।

अधिगम परिणाम

- विद्यार्थी संस्कृत व्याकरण की मूल संरचना एवं सिद्धांतों को समझ सकेंगे।
- विद्यार्थी विभिन्न सन्धियों एवं समासों की पहचान एवं उनका सही प्रयोग कर सकेंगे।
- संस्कृत भाषा में शुद्ध वाक्य-रचना एवं व्याकरणिक प्रयोग करने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी संस्कृत व्याकरण के इतिहास एवं प्रमुख वैयाकरणों के योगदान का विश्लेषण कर सकेंगे।
- विद्यार्थियों में संस्कृत पठन, लेखन एवं अनुवाद कौशल का विकास होगा।
- संस्कृत साहित्य के अध्ययन में व्याकरणिक दृष्टिकोण का प्रयोग करने में सक्षम होंगे

दिशा निर्देश:

परीक्षा समय - 3 घंटा , पूर्णांक- 70

- प्रथम प्रश्न वस्तुनिष्ठ होगा जिसमें 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रत्येक यूनिट में से 2 पूछे जाएंगें 16
- इकाई- 1 में से 8 में से किन्हीं चार प्रत्याहारों एवं उच्चारण स्थानों का विवरण - 08
- इकाई- 2 में से 4 में से किन्हीं 2 सन्धि-सूत्रों की सोदाहरण परिभाषा- 08
- इकाई- 2 में से 8 में से किन्हीं 4 प्रयोगों में संधि अथवा विच्छेद प्रदर्शन -08
- इकाई-3 में से 8 शब्दों में से किन्ही 4 पदों का समस्त या विग्रह रूप। 08
- 4 पदों में से है किन्हीं 2 के लक्षण एवं उदाहरण । 08
- इकाई- 4 में से 4 में किन्हीं 2 प्रश्नों पर विस्तृत टिप्पणी - 14

B A SANSKRIT
Semester- 4
Paper - 2

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Cre dits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A11	संस्कृत गीतिकाव्य- मेघदूत	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण

इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत संस्कृत गीतिकाव्य की श्रेष्ठ कृति *मेघदूत* का अध्ययन कराया जाएगा। इस काव्य के माध्यम से विद्यार्थियों को विरह, प्रेम, प्रकृति-चित्रण एवं भाव-सौंदर्य की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति से परिचित कराया जाएगा। पाठ्यक्रम में *मेघदूत* की कथावस्तु, पूर्वमेघ एवं उत्तरमेघ का वर्णन, काव्य-शिल्प, रस, अलंकार, छन्द तथा कालिदास की काव्य-प्रतिभा का अध्ययन किया जाएगा। साथ ही भारतीय सांस्कृतिक चेतना, प्रकृति एवं मानव भावनाओं के समन्वय तथा संस्कृत गीतिकाव्य की विशेषताओं का विवेचन भी कराया जाएगा। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में साहित्यिक संवेदनशीलता, काव्य-बोध एवं संस्कृत भाषा के प्रति रुचि विकसित करेगा।

अधिगम उद्देश्य :-

- विद्यार्थियों को संस्कृत गीतिकाव्य की परंपरा एवं विशेषताओं से परिचित कराना।
- मेघदूत की कथावस्तु एवं भाव-सौंदर्य का ज्ञान प्रदान करना।
- कालिदास की काव्य-शैली, प्रकृति-चित्रण एवं भावाभिव्यक्ति की समझ विकसित करना।
- विद्यार्थियों में रस, अलंकार एवं छन्द संबंधी ज्ञान का विकास करना।
- संस्कृत काव्य के माध्यम से साहित्यिक एवं सांस्कृतिक चेतना विकसित करना।
- विद्यार्थियों में काव्य-पठन, व्याख्या एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करना।

पाठ्यक्रम:

इकाई- 1 गीतिकाव्य का इतिहास

इकाई- 2 कालिदास कृत 'मेघदूत' (पूर्वमेघ-1-30 श्लोक)

इकाई- 3 कालिदास कृत 'मेघदूत' (पूर्वमेघ- 31-63 श्लोक)

इकाई- 4 प्रमुख गीतिकाव्यों का परिचय

(क) ऋतुसंहार ।

(ख) गीतिगोविन्द ।

(ग) अमरुकशतक ।

(घ) चौरपञ्चाशिका ।

संदर्भ ग्रंथ

1. कालिदास। (2018). मेघदूतम् (सम्पा. हरिदत्त शास्त्री). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
2. कालिदास। (2016). मेघदूत (हिन्दी व्याख्यासहित). दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
3. बलदेव उपाध्याय। (2014). संस्कृत साहित्य का इतिहास. वाराणसी: शारदा निकेतन।
4. कपिलदेव द्विवेदी। (2017). कालिदास का काव्यवैभव. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
5. रामजी उपाध्याय। (2015). संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन।
6. सत्यव्रत शास्त्री। (2018). संस्कृत काव्यशास्त्र के तत्व. नई दिल्ली: भारतीय विद्या प्रकाशन।
7. वाचस्पति गैरोला। (2013). संस्कृत साहित्य एवं समीक्षा. इलाहाबाद: किताब महल।
8. हजारीप्रसाद द्विवेदी। (2011). भारतीय साहित्य की भूमिका. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

अधिगम उपलब्धियाँ :-

- विद्यार्थी संस्कृत गीतिकाव्य की मूल विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- मेघदूत की कथावस्तु, भावपक्ष एवं काव्य-सौंदर्य का विश्लेषण कर सकेंगे।
- विद्यार्थी रस, अलंकार एवं छन्दों की पहचान एवं व्याख्या करने में सक्षम होंगे।
- कालिदास की काव्य-प्रतिभा एवं प्रकृति-चित्रण की विशेषताओं को समझ सकेंगे।

- विद्यार्थियों में संस्कृत पठन, व्याख्या एवं साहित्यिक अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित होगी।
- संस्कृत गीतिकाव्य के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक महत्व का मूल्यांकन कर सकेंगे।

दिशा निर्देश:-

परीक्षा समय - 3 घंटा , पूर्णांक- 70

- प्रथम प्रश्न वस्तुनिष्ठ होगा जिसमें 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रत्येक यूनिट में से 2 पूछे जाएंगें -16
- इकाई- 1 में से 4 श्लोको में से किन्हीं 2 की व्याख्या कीजिए -10
- इकाई- 1 में से 2 में से 1 आलोचनात्मक प्रश्न -06
- इकाई- 2 में से किन्हीं 4 श्लोक में से 2 की व्याख्या -10
- इकाई -2 में से 2 में से 1 आलोचनात्मक प्रश्न -06
- इकाई- 3 में से 2 में से 1 आलोचनात्मक प्रश्न- 08
- इकाई- 3 में से दो में से किसी एक पर टिप्पणी कीजिए -06
- इकाई- 4 में से 4 में से किन्हीं 2 पर टिप्पणी कीजिए -08

B A SANSKRIT
Semester- 4
Paper - 3

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A12	संस्कृत साहित्य में नीतिकाव्य	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण

इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत संस्कृत साहित्य की प्रमुख नीतिपरक कृतियों नीतिशतकम् एवं विदुरनीति का अध्ययन कराया जाएगा। इन ग्रंथों के माध्यम से नैतिकता, सदाचार, कर्तव्य, राजनीति, समाजनीति एवं आदर्श जीवन-मूल्यों का परिचय कराया जाएगा। विद्यार्थियों को नीति साहित्य की भाषा-शैली, सूक्तिपरक अभिव्यक्ति, दार्शनिक दृष्टि एवं व्यावहारिक जीवन में उसके महत्व का अध्ययन कराया जाएगा।

पाठ्यक्रम में नीतिशतकम् के नीति-सूत्रों तथा विदुरनीति में वर्णित राजधर्म, लोकनीति एवं मानव-व्यवहार संबंधी शिक्षाओं का विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही भारतीय संस्कृति एवं जीवन-दर्शन में नीति साहित्य के योगदान का अध्ययन भी कराया जाएगा।

अधिगम उद्देश्य :

- विद्यार्थियों को संस्कृत नीति साहित्य की परंपरा एवं विशेषताओं से परिचय।
- नीतिशतकम् एवं विदुरनीति के नैतिक एवं दार्शनिक पक्ष का ज्ञान।
- विद्यार्थियों में नैतिकता, सदाचार एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना।
- नीति साहित्य की भाषा-शैली एवं सूक्तिपरक अभिव्यक्ति की समझ का विकास।
- विद्यार्थियों में विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास।

पाठ्यक्रम:

इकाई- 1 संस्कृत नीतिसाहित्य का इतिहास।

इकाई- 2 नीतिशतक (1 से 25 श्लोक)।

इकाई- 3 नीतिशतक (26-50 श्लोक)।

इकाई- 4 विदुरनीति (1-25 श्लोक)

संदर्भ ग्रंथ

1. भर्तृहरि। (2018). नीतिशतकम् (सम्पा. हरिदत्त शास्त्री). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
2. महाभारत. (2016). उद्योगपर्व (विदुरनीति सहित). वाराणसी: गीता प्रेस।
3. बलदेव उपाध्याय। (2014). संस्कृत साहित्य का इतिहास. वाराणसी: शारदा निकेतन।
4. कपिलदेव द्विवेदी। (2017). संस्कृत नीतिकाव्य परंपरा. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
5. रामजी उपाध्याय। (2015). संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन।
6. सत्यव्रत शास्त्री। (2018). संस्कृत काव्यशास्त्र के तत्व. नई दिल्ली: भारतीय विद्या प्रकाशन।
7. वाचस्पति गैरोला। (2013). संस्कृत साहित्य एवं समीक्षा. इलाहाबाद: किताब महल।
8. हजारीप्रसाद द्विवेदी। (2011). भारतीय संस्कृति और साहित्य. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

अधिगम उपलब्धियाँ :

- विद्यार्थी संस्कृत नीति साहित्य की मूल विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- नीतिशतकम् एवं विदुरनीति के नीति-सिद्धांतों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- विद्यार्थी नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों की व्याख्या करने में सक्षम होंगे।
- नीति साहित्य की भाषा-शैली एवं सूक्तियों की पहचान कर सकेंगे।
- विद्यार्थियों में संस्कृत पठन, व्याख्या एवं साहित्यिक विश्लेषण की क्षमता विकसित होगी।
- भारतीय जीवन-दर्शन एवं सांस्कृतिक मूल्यों में नीति साहित्य के महत्व का मूल्यांकन कर सकेंगे।

दिशा निर्देश:-

परीक्षा समय - 3 घंटा , पूर्णांक- 70

- प्रथम प्रश्न वस्तुनिष्ठ होगा जिसमें 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रत्येक यूनिट में से 2 पूछे जाएंगें- 16
- इकाई- 1 में से 2 में से 1 आलोचनात्मक प्रश्न -10

- इकाई- 2 में से 4 श्लोकों में से किन्हीं 2 की व्याख्या - 12
- इकाई- 3 में से 4 श्लोकों में से किन्हीं 2 की व्याख्या - 12
- इकाई- 4 में से 2 श्लोकों में से 1 की सप्रसंग व्याख्या -8
- सम्पूर्ण इकाई में से 2 टिप्पणियाँ - 12

B A SANSKRIT
Semester- 5
Paper - 1

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A13	संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण

इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत संस्कृत काव्यशास्त्र की उत्पत्ति, विकास एवं प्रमुख आचार्यों के काव्य-सिद्धांतों का अध्ययन कराया जाएगा। विद्यार्थियों को भारतीय काव्यशास्त्र की विभिन्न परंपराओं – रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति एवं औचित्य सिद्धांत – का परिचय कराया जाएगा। साथ ही भरतमुनि, भामह, दण्डी, वामन, आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्त, मम्मट एवं विश्वनाथ आदि आचार्यों के योगदान का विवेचन किया जाएगा।

इस पाठ्यक्रम में संस्कृत काव्यशास्त्र के सिद्धांतों, काव्य के स्वरूप, काव्य-तत्त्वों एवं साहित्यिक सौंदर्य की व्याख्या का अध्ययन कराया जाएगा। इसके माध्यम से विद्यार्थियों में साहित्यिक समीक्षा, आलोचनात्मक दृष्टिकोण एवं काव्य-बोध का विकास किया जाएगा।

अधिगम उद्देश्य :-

- संस्कृत काव्यशास्त्र की मूल अवधारणाओं एवं इतिहास का परिचय।
- भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धांतों एवं आचार्यों के योगदान का ज्ञान।
- रस, अलंकार, रीति, ध्वनि एवं वक्रोक्ति आदि सिद्धांतों की समझ का विकास।
- विद्यार्थियों में साहित्यिक समीक्षा एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास।
- संस्कृत काव्य के सौंदर्य एवं अभिव्यक्ति पक्ष की समझ का विकास।
- विद्यार्थियों में काव्य-पठन एवं विश्लेषण क्षमता का प्रोत्साहन।

पाठ्यक्रम:

इकाई- 1 संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास

इकाई- 2 काव्य प्रयोजन, काव्य भेद, काव्य का स्वरुप एवं लक्षण, काव्य हेतु (काव्यादर्श)

इकाई- 3 शव्द शक्ति - अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना, रससूत्र (काव्यप्रकाश)

इकाई- 4 अलंकार - अनुप्रास,यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अन्योक्ति, विशेषोक्ति, विभावना (काव्यप्रकाश)

संदर्भ ग्रंथ

1. नाट्यशास्त्र. (2016). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
2. आनन्दवर्धन। (2015). ध्वन्यालोक. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
3. मम्मट। (2017). काव्यप्रकाश. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
4. विश्वनाथ। (2014). साहित्यदर्पण. वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।
5. भामह। (2013). काव्यालंकार. नई दिल्ली: भारतीय विद्या प्रकाशन।
6. दण्डी। (2012). काव्यादर्श. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
7. बलदेव उपाध्याय। (2014). संस्कृत साहित्य का इतिहास. वाराणसी: शारदा निकेतन।
8. सत्यव्रत शास्त्री। (2018). संस्कृत काव्यशास्त्र के तत्व. नई दिल्ली: भारतीय विद्या प्रकाशन।

अधिगम उपलब्धि :-

- विद्यार्थी संस्कृत काव्यशास्त्र के इतिहास एवं विकास को समझ सकेंगे।
- विभिन्न काव्य-सिद्धांतों एवं आचार्यों के मतों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- विद्यार्थी रस, अलंकार एवं अन्य काव्य-तत्त्वों की पहचान एवं व्याख्या करने में सक्षम होंगे।
- संस्कृत काव्य के साहित्यिक एवं सौंदर्यपरक पक्ष का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण का विकास होगा।
- संस्कृत साहित्य के अध्ययन में काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों का प्रयोग करने में सक्षम होंगे।

दिशा निर्देश :-

परीक्षा समय - 3 घंटा , पूर्णांक- 70

- प्रथम प्रश्न वस्तुनिष्ठ होगा जिसमें 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रत्येकं यूनिट से 2 पूछे जाएंगें 16
- इकाई- 1 से 2 दीर्घोत्तरीय प्रश्नों में से किसी 1 प्रश्न का उत्तर -10
- इकाई- 2 से 2 दीर्घोत्तरीय प्रश्नों में से किसी 1 प्रश्न का उत्तर -10
- इकाई -3 से 2 दीर्घोत्तरीय प्रश्नों में से किसी 1 प्रश्न का उत्तर -10
- इकाई- 4 से 4 में से 2 अलंकारों का वर्णन -10
- सम्पूर्ण इकाईयों से सम्बन्धित 4 प्रश्नों में से किन्ही 2 प्रश्नों पर टिप्पणी - 14

B A SANSKRIT
Semester- 5
Paper - 2

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A14	भाषा विज्ञान	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

भाषा विज्ञान : पाठ्यक्रम विवरण

भाषा विज्ञान भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन से संबंधित विषय है। इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत भाषा की उत्पत्ति, विकास, संरचना, ध्वनि, शब्द, वाक्य तथा अर्थ के विभिन्न पक्षों का अध्ययन कराया जाएगा। विद्यार्थी भाषा के स्वरूप, भाषायी परिवारों, भारतीय एवं पाश्चात्य भाषा-विज्ञान की परंपराओं तथा आधुनिक भाषावैज्ञानिक सिद्धांतों से परिचित होंगे। इसके माध्यम से विद्यार्थियों में भाषायी विश्लेषण, व्याकरणिक संरचना की समझ तथा भाषा के सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व का ज्ञान विकसित होगा।

अधिगम उद्देश्य:-

- भाषा विज्ञान की मूल अवधारणाओं से परिचय।
- भाषा की उत्पत्ति, विकास एवं स्वरूप का ज्ञान।
- ध्वनि, शब्द, वाक्य एवं अर्थ के वैज्ञानिक अध्ययन की समझ का विकास।
- भारतीय एवं पाश्चात्य भाषा-विज्ञान की परंपराओं का परिचय।
- भाषायी संरचनाओं के विश्लेषण की क्षमता का विकास।
- भाषा और समाज, संस्कृति तथा संप्रेषण के संबंध को समझाना।
- विद्यार्थियों में भाषायी अनुसंधान एवं आलोचनात्मक दृष्टि का विकास।

पाठ्यक्रम:

इकाई- 1. भाषा विज्ञान - परिचय एवं प्रयोजन, भाषा की परिभाषा

क. भाषा का उद्भव सिद्धान्त

ख. भाषा तथा वाक् में अन्तर

ग. भाषा और बोली में अन्तर

इकाई- 2 संस्कृत ध्वनियों के विशेष संदर्भ में

(क) मानवीय ध्वनि -यंत्र

(ख) ध्वनि परिवर्तन के कारण

(ग) ध्वनि नियम (ग्रिम, ग्रासमान, वर्नर)

इकाई- 3 अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ एवं कारण

ध्वनि परिवर्तन की दिशाएँ एवं कारण

इकाई- 4. भाषाओं का वर्गीकरण - आकृतिमूलक एवं पारिवारिक मूलक

भारोपीय भाषा परिवार का सामान्य परिचय

संदर्भ ग्रंथ

1. तिवारी, भोलानाथ. (2018). भाषा विज्ञान. इलाहाबाद: किताब महल।
2. बाहरी, हरदेव. (2015). भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन।
3. सक्सेना, बाबूराम. (2012). सामान्य भाषा विज्ञान. प्रयागराज: हिंदी साहित्य सम्मेलन।
4. शर्मा, देवेन्द्रनाथ. (2016). भाषा विज्ञान की भूमिका. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन।
5. Bloomfield, L. (1984). Linguistics. Chicago: University of Chicago Press.
6. Fromkin, V., Rodman, R., & Hyams, N. (2017). An Introduction to Language (11th ed.). Boston: Cengage Learning.
7. Sapir, E. (2004). Language. New York: Dover Publications.
8. Chomsky, N. (1965). Aspects of the Theory of Syntax. Cambridge: MIT Press.

अधिगम उपलब्धि:

- विद्यार्थी भाषा विज्ञान की मूल संकल्पनाओं को समझने में सक्षम होंगे।
- भाषा की संरचना एवं कार्यप्रणाली का वैज्ञानिक विश्लेषण कर सकेंगे।
- ध्वनिविज्ञान, रूपविज्ञान, वाक्यविज्ञान एवं अर्थविज्ञान के सिद्धांतों का प्रयोग कर सकेंगे।
- भारतीय भाषाओं एवं संस्कृत भाषा की संरचनात्मक विशेषताओं का अध्ययन कर सकेंगे।
- भाषा एवं समाज के पारस्परिक संबंधों को समझ सकेंगे।
- भाषायी समस्याओं एवं व्याकरणिक संरचनाओं का विश्लेषण करने में समर्थ होंगे।
- भाषा विज्ञान के क्षेत्र में उच्च अध्ययन एवं अनुसंधान हेतु आवश्यक आधार विकसित कर सकेंगे।

दिशा निर्देश :

परीक्षा समय - 3 घंटा , पूर्णांक- 70

- प्रथम प्रश्न वस्तुनिष्ठ होगा जिसमें 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रत्येक यूनिट में से 2 पूछे जाएंगें - 16
- इकाई- 1 में से 2 दीर्घोत्तरीय प्रश्नों में से किसी 1 प्रश्न का उत्तर -10
- इकाई- 2 में से 2 दीर्घोत्तरीय प्रश्नों में से किसी 1 प्रश्न का उत्तर -10
- इकाई -3 में से 2 दीर्घोत्तरीय प्रश्नों में से किसी 1 प्रश्न का उत्तर -10
- इकाई- 4 में से 2 दीर्घोत्तरीय प्रश्नों में से किसी 1 प्रश्न का उत्तर -10
- सम्पूर्ण इकाईयों से सम्बन्धित 4 प्रश्नों में से किन्ही 2 प्रश्नों पर टिप्पणी - 14

B A SANSKRIT
Semester- 5
Paper - 3

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A15	**संस्कृत व्याकरण तथा लेखन कौशल**	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण

इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत संस्कृत व्याकरण के प्रमुख अंगों तथा लेखन-कौशल का अध्ययन कराया जाएगा। विद्यार्थियों को तद्धित-प्रकरण, अव्यय-प्रकरण तथा कारक-प्रकरण के माध्यम से संस्कृत भाषा की व्याकरणिक संरचना का ज्ञान प्रदान किया जाएगा। साथ ही सूचना-लेखन एवं परिचय-लेखन के माध्यम से व्यवहारिक लेखन-कौशल का विकास किया जाएगा। इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थी संस्कृत भाषा के शुद्ध प्रयोग, व्याकरणिक विश्लेषण तथा औपचारिक लेखन की विधियों में दक्ष बनेंगे। भाषा की शुद्धता, अभिव्यक्ति-कौशल एवं लेखन-क्षमता के विकास पर विशेष बल दिया जाएगा।

अधिगम उद्देश्य :-

- विद्यार्थियों को संस्कृत व्याकरण के मूल सिद्धांतों से परिचित कराना।
- तद्धित, अव्यय एवं कारक-प्रकरण का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना।
- संस्कृत भाषा के शुद्ध प्रयोग एवं व्याकरणिक संरचना की समझ विकसित करना।
- विद्यार्थियों में संस्कृत लेखन-कौशल का विकास करना।
- सूचना-लेखन एवं परिचय-लेखन की विधियों का ज्ञान कराना।
- संस्कृत भाषा में अभिव्यक्ति एवं संप्रेषण क्षमता का विकास करना।
- विद्यार्थियों को व्यवहारिक एवं औपचारिक संस्कृत लेखन में दक्ष बनाना।

पाठ्यक्रम:

इकाई- 1 तद्धित प्रकरण

अपत्यार्थक - अण्, इञ्, यञ्, ढक्, खञ्,

रक्तार्थक- अण्, यत्,

ठगाधिकार- ठक्,

भावकर्माथक- त्व, तल्, इमनिच्,

इकाई- 2 (क) अव्यय ,उपसर्ग

(ख) कारक प्रकरण

इकाई- 3 (क) सूचना लेखन

(ख) संस्कृत में परिचय लेखन

(ग) पत्र लेखन

इकाई- 4 वाच्य परिवर्तन

संदर्भ ग्रंथ

1. शर्मा, वासुदेव. (2016). संस्कृत व्याकरण और रचना. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान।
2. मिश्र, कपिलदेव द्विवेदी. (2014). व्याकरण चन्द्रिका. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
3. शास्त्री, रामस्वरूप. (2018). लघुसिद्धान्तकौमुदी. नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
4. दीक्षित, भोलाशंकर. (2015). संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका. प्रयागराज: हिंदी साहित्य सम्मेलन।
5. पाणिनि. (2012). अष्टाध्यायी. वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।
6. भट्टोजि दीक्षित. (2017). सिद्धान्तकौमुदी. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
7. त्रिपाठी, श्रीकृष्णमणि. (2019). संस्कृत रचना एवं अनुवाद कौशल. नई दिल्ली: संस्कृत भारती।
8. जोशी, कृष्णलाल. (2013). संस्कृत लेखन कौशल. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।

अधिगम उपलब्धि:-

- विद्यार्थी तद्धित, अव्यय एवं कारक-प्रकरण का सही प्रयोग करने में सक्षम होंगे।
- संस्कृत भाषा की व्याकरणिक संरचना को समझ सकेंगे।
- विद्यार्थी शुद्ध एवं प्रभावी संस्कृत लेखन कर सकेंगे।
- सूचना-लेखन एवं परिचय-लेखन की विधियों का व्यवहारिक प्रयोग कर सकेंगे।
- संस्कृत भाषा में अभिव्यक्ति एवं संप्रेषण कौशल विकसित कर सकेंगे।
- व्याकरणिक त्रुटियों का विश्लेषण एवं संशोधन करने में समर्थ होंगे।
- संस्कृत भाषा के अध्ययन एवं अनुसंधान हेतु आवश्यक भाषायी आधार विकसित कर सकेंगे।

दिशा-निर्देश:-

परीक्षा समय - 3 घंटा , पूर्णांक- 70

- प्रथम प्रश्न वस्तुनिष्ठ होगा जिसमें 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रत्येक यूनिट में से 2 पूछे जाएंगें -16
- इकाई-1 (क) 8 शब्दों में से किन्ही 4 में प्रकृति प्रत्यय प्रदर्शन -08

  (ख) प्रकृति एवं प्रत्यय संबंधी प्रश्न आठ में से चार रूप -08
- इकाई- 2 (क) अव्यय सम्बन्धित प्रश्न -05

  (ख) उपसर्ग सम्बन्धित प्रश्न -05
- (ग) 8 में से 4 संस्कृत वाक्य में कारक की दृष्टि से संशोधन - 04
- इकाई- 3 (क) सूचना लेखन (नोटिस) सम्बन्धित प्रश्न - 06

  (ख) संस्कृत भाषा में स्व -परिचयात्मक प्रश्न -06

  (ग) 2 में से किसी एक विषय पर पत्र लेखन -06
- इकाई- 4 पांच में से तीन वाक्य का वाच्य परिवर्तन - 06

B A SANSKRIT
Semester- 6
Paper - 1

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A16	भारतीय दर्शन-तर्कसंग्रह	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम भारतीय दर्शन की न्याय-वैशेषिक परंपरा में विकसित तर्कशास्त्र एवं ज्ञानमीमांसा का परिचय प्रदान करता है। 'तर्कसंग्रह' ग्रंथ के माध्यम से विद्यार्थियों को पदार्थ, प्रमाण, अनुमान, हेत्वाभास, सामान्य-विशेष, समवाय आदि दार्शनिक सिद्धांतों का व्यवस्थित अध्ययन कराया जाएगा। पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में तार्किक चिंतन, विश्लेषणात्मक क्षमता तथा दार्शनिक दृष्टि का विकास करना है। इसके अध्ययन से विद्यार्थी भारतीय ज्ञान-परंपरा में निहित तर्कपद्धति एवं विचार-शैली को समझने में समर्थ होंगे।

अधिगम उद्देश्य

- विद्यार्थियों का भारतीय दर्शन की न्याय-वैशेषिक परंपरा से परिचय।
- 'तर्कसंग्रह' ग्रंथ के मूल सिद्धांतों एवं दार्शनिक अवधारणाओं का ज्ञान।
- प्रमाण, प्रत्यक्ष, अनुमान तथा तर्क की विभिन्न प्रक्रियाओं का अध्ययन।
- विद्यार्थियों में तार्किक एवं विश्लेषणात्मक चिंतन क्षमता का विकास।
- भारतीय तर्कशास्त्र एवं आधुनिक विचार-पद्धति के मध्य संबंध।
- दार्शनिक समस्याओं के समाधान हेतु न्यायशास्त्रीय दृष्टिकोणका विकास।
- संस्कृत दार्शनिक ग्रंथों के अध्ययन एवं व्याख्या की क्षमता का विकास।

पाठ्यक्रम

इकाई- 1 वैदिक दर्शन का इतिहास

इकाई - 2 अवैदिक दर्शन का इतिहास-(बौध्द,जैन, चार्वाक)

इकाई- 3 तर्क संग्रह - पदार्थ से शब्द लक्षण तक

इकाई- 4 तर्क संग्रह - बुद्धि लक्षण से समाप्ति पर्यन्त

संदर्भ ग्रंथ

1. अन्नंभट्ट. (2018). तर्कसंग्रह (व्याख्यासहित). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान।
2. शर्मा, चन्द्रधर. (2019). भारतीय दर्शन : आलोचन और अनुशीलन. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
3. मिश्र, उमेश. (2017). भारतीय दर्शन. प्रयागराज: उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान।
4. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली. (2020). भारतीय दर्शन (भाग 1). नई दिल्ली: राजपाल एंड सन्स।
5. शास्त्री, ढुण्डिराज. (2016). तर्कसंग्रह दीपिका. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
6. उपाध्याय, बलदेव. (2018). भारतीय दर्शन. वाराणसी: शारदा निकेतन।
7. सिंह, रामनाथ. (2015). न्यायदर्शन एवं तर्कशास्त्र. दिल्ली: साहित्य भंडार।
8. त्रिपाठी, श्रीकृष्णमणि. (2019). भारतीय तर्कशास्त्र का इतिहास. वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।

अधिगम उपलब्धि:-

- विद्यार्थी भारतीय दर्शन की न्याय-वैशेषिक परंपरा की मूल अवधारणाओं को समझ सकेंगे।
- विद्यार्थी 'तर्कसंग्रह' में वर्णित पदार्थों एवं प्रमाणों का विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थियों में तार्किक चिंतन, तर्क-वितर्क एवं विवेचन की क्षमता विकसित होगी।
- विद्यार्थी प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान एवं शब्द प्रमाण का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- विद्यार्थी हेत्वाभास एवं तर्कदोषों की पहचान कर सकेंगे।
- भारतीय तर्कशास्त्र की वैज्ञानिक एवं दार्शनिक उपयोगिता को समझ सकेंगे।
- विद्यार्थी संस्कृत दार्शनिक ग्रंथों के अध्ययन, व्याख्या एवं अनुसंधान में दक्षता प्राप्त करेंगे।

दिशा - निर्देश:-

परीक्षा समय - 3 घंटा , पूर्णांक- 70

1. प्रथम प्रश्न वस्तुनिष्ठ होगा जिसमें 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रत्येक यूनिट में से 2 पूछे जाएंगें - 16
2. इकाई -1. 2 प्रश्नों में से 1 आलोचनात्मक प्रश्न -10
3. इकाई 2 - 2 प्रश्नों में से 1 आलोचनात्मक प्रश्न -10
4. इकाई 3 - 4 प्रश्नों में से 2 का लक्षण सहित व्याख्या -10
5. इकाई 4- 4 प्रश्नों में से 2 का लक्षण सहित व्याख्या -10
6. चारों इकाईयों मे से किन्हीं 2 विषयों पर विस्तृत टिप्पणी -14

B A SANSKRIT
Semester- 6
Paper - 2

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A17	अभिलेख शास्त्र (Epigraphy)	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम भारतीय अभिलेख परंपरा, शिलालेखों, ताम्रपत्रों तथा प्राचीन लेखन पद्धतियों के अध्ययन पर आधारित है। इसके अंतर्गत अभिलेखों की उत्पत्ति, विकास, भाषा, लिपि, ऐतिहासिक महत्व तथा सांस्कृतिक योगदान का अध्ययन कराया जाएगा। विद्यार्थियों को ब्राह्मी, खरोष्ठी, नागरी आदि प्रमुख लिपियों का परिचय प्रदान किया जाएगा। साथ ही, अभिलेखों के माध्यम से भारतीय इतिहास, धर्म, समाज, प्रशासन एवं संस्कृति के विभिन्न पक्षों का ज्ञान कराया जाएगा। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में ऐतिहासिक स्रोतों के अध्ययन एवं विश्लेषण की क्षमता विकसित करने में सहायक होगा।

अधिगम उद्देश्य:-

- विद्यार्थियों का अभिलेख शास्त्र की मूल अवधारणाओं से परिचय।
- भारतीय अभिलेख परंपरा एवं उसके ऐतिहासिक विकास का ज्ञान।
- प्राचीन भारतीय लिपियों एवं लेखन पद्धतियों का अध्ययन।
- शिलालेख, ताम्रपत्र एवं अन्य अभिलेखीय स्रोतों के महत्व को समझाना।
- विद्यार्थियों में अभिलेखों के पठन, विश्लेषण एवं व्याख्या की क्षमता का विकास।
- भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के पुनर्निर्माण में अभिलेखों की भूमिका का ज्ञान।
- शोध एवं ऐतिहासिक अध्ययन के प्रति विद्यार्थियों की रुचि का विकास।

पाठ्यक्रम:

इकाई- 1 अभिलेखशास्त्र का परिचय - प्रकार, महत्व, इतिहास, सम्बद्ध विद्वान

इकाई- 2 लिपिशास्त्र- लिखित सामग्री , उत्कीर्णन, पुस्तकालय, लिपियों का परिचय

इकाई- 3 चयनित अभिलेखों का अध्ययन- अशोक महरौली,सारनाथ, विग्रहराज- जूनागढ,

इकाई- 4 संवत्सर का ज्ञान - कलि, युधिष्ठिर, विक्रम, शक, गुप्त

संदर्भ ग्रंथ

1. उपाध्याय, वासुदेव. (2018). प्राचीन भारतीय अभिलेखों का अध्ययन. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
2. पाण्डेय, राजबली. (2016). भारतीय पुरालेख शास्त्र. वाराणसी: चौखम्बा ओरिएंटालिया।
3. शर्मा, आर. एस. (2019). प्राचीन भारत का इतिहास. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
4. जायसवाल, काशीप्रसाद. (2017). भारतीय इतिहास एवं अभिलेख. पटना: बिहार राष्ट्रभाषा परिषद।
5. सिरकार, डी. सी. (2015). भारतीय अभिलेखशास्त्र. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
6. अग्रवाल, वासुदेवशरण. (2014). भारतीय कला एवं अभिलेख. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
7. सिंह, रामवृक्ष. (2020). भारतीय लिपि एवं अभिलेख परंपरा. प्रयागराज: हिन्दी साहित्य सम्मेलन।
8. त्रिपाठी, कृष्णदत्त. (2018). पुरालेख एवं प्राचीन भारतीय संस्कृति. दिल्ली: विश्वविद्यालय प्रकाशन।

अधिगम उपलब्धि :-

- विद्यार्थी अभिलेख शास्त्र की मूल अवधारणाओं एवं स्वरूप को समझ सकेंगे।
- विद्यार्थी प्रमुख भारतीय लिपियों एवं अभिलेखीय परंपराओं की पहचान कर सकेंगे।
- विद्यार्थी शिलालेखों एवं ताम्रपत्रों का प्रारंभिक अध्ययन एवं विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थियों में ऐतिहासिक स्रोतों के प्रति आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टि विकसित होगी।
- विद्यार्थी भारतीय इतिहास, धर्म एवं संस्कृति के अध्ययन में अभिलेखों के महत्व को समझ सकेंगे।
- विद्यार्थियों में प्राचीन दस्तावेजों के संरक्षण एवं अध्ययन के प्रति जागरूकता विकसित होगी।
- विद्यार्थी अभिलेखीय अनुसंधान एवं इतिहास लेखन की प्रारंभिक विधियों से परिचित होंगे।

दिशा-निर्देश:-

परीक्षा समय - 3 घंटा , पूर्णांक- 70

- प्रथम प्रश्न वस्तुनिष्ठ होगा जिसमें आठ वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रत्येकं यूनिट में से दो पूछे जाएंगें -16
- इकाई- 1 - 4 में से 2 आलोचनात्मक प्रश्न -16

- इकाई- 2 - 4 में से 2 आलोचनात्मक प्रश्न -16
- इकाई- 3 - 4 में से 2 आलोचनात्मक प्रश्न -16
- इकाई- 4 चार में से किन्ही दो पर टिप्पणी -06

B A SANSKRIT
Semester- 6
Paper - 3

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A18	संस्कृत नाट्य साहित्य (अभिज्ञानशाकुन्तलम्)	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम महाकवि कालिदास रचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अध्ययन पर आधारित है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को संस्कृत नाट्य परंपरा, नाट्यशास्त्रीय तत्वों तथा कालिदास की काव्यप्रतिभा का परिचय कराया जाएगा। नाटक की कथावस्तु, पात्र-चित्रण, रस, अलंकार, प्रकृति-चित्रण तथा सांस्कृतिक एवं मानवीय मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन कराया जाएगा। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को संस्कृत नाटक की भाषा-शैली, संवाद-कला एवं भारतीय नाट्य परंपरा की विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त होगा। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में साहित्यिक संवेदना, आलोचनात्मक दृष्टि तथा संस्कृत नाट्य साहित्य के अध्ययन की क्षमता विकसित करेगा।

अधिगम उद्देश्य:

- विद्यार्थियों का संस्कृत नाट्य साहित्य एवं उसकी परंपरा से परिचय।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् की कथावस्तु, पात्र एवं नाट्य-सौंदर्य का अध्ययन।
- रस, अलंकार एवं नाट्यशास्त्रीय सिद्धांतों का व्यावहारिक ज्ञान।
- कालिदास की काव्यशैली एवं प्रकृति-चित्रण की विशेषताओं को समझाना।
- विद्यार्थियों में संस्कृत साहित्य के प्रति रुचि एवं साहित्यिक संवेदनशीलता का विकास।
- भारतीय सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों की समझ।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण का विकास।

पाठ्यक्रम:

इकाई-1 नाट्य शास्त्र का परिचय

इकाई- 2 अभिज्ञान शाकुन्तलम् (अंक-1-2)

इकाई- 3 अभिज्ञान शाकुन्तलम् (अंक-4-5)

इकाई- 4 नाटक की पारिभाषिक शब्दावलियाँ

संदर्भ ग्रंथ

1. कालिदास. (2019). अभिज्ञानशाकुन्तलम् (व्याख्यासहित). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान।
2. मिश्र, रामचन्द्र. (2018). संस्कृत नाट्य साहित्य का इतिहास. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
3. शास्त्री, कपिलदेव द्विवेदी. (2017). कालिदास साहित्य विमर्श. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
4. उपाध्याय, बलदेव. (2020). संस्कृत साहित्य का इतिहास. वाराणसी: शारदा निकेतन।
5. त्रिपाठी, कृष्णमणि. (2016). संस्कृत नाटक और नाट्यशास्त्र. प्रयागराज: हिन्दी साहित्य सम्मेलन।
6. भारद्वाज, शिवप्रसाद. (2015). कालिदास के नाटकों का साहित्यिक अध्ययन. नई दिल्ली: साहित्य अकादेमी।
7. भरतमुनि. (2018). नाट्यशास्त्रम्. वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।
8. राधावल्लभ त्रिपाठी. (2019). संस्कृत साहित्य एवं नाट्य परंपरा. नई दिल्ली: राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान।

अधिगम उपलब्धि:

- विद्यार्थी संस्कृत नाट्य साहित्य की मूल विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- विद्यार्थी अभिज्ञानशाकुन्तलम् की कथावस्तु एवं पात्रों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- विद्यार्थियों को रस, अलंकार एवं नाट्यशास्त्रीय तत्वों का ज्ञान प्राप्त होगा।
- विद्यार्थी कालिदास की काव्यप्रतिभा एवं साहित्यिक योगदान को समझ सकेंगे।
- विद्यार्थियों में संस्कृत नाटक के पठन, व्याख्या एवं समीक्षा की क्षमता विकसित होगी।
- विद्यार्थी भारतीय संस्कृति, प्रकृति एवं मानवीय मूल्यों के प्रति संवेदनशील बनेंगे।
- विद्यार्थियों में साहित्यिक अभिरुचि एवं अनुसंधानात्मक दृष्टि का विकास होगा।

दिशा-निर्देश:-

परीक्षा समय - 3 घंटा , पूर्णांक- 70

- प्रथम प्रश्न लघुत्तरीय होगा जिसमें 8 लघुत्तरीय प्रश्न प्रत्येक यूनिट में से 2 पूछे जाएंगे -16
- इकाई- 1- किन्ही 2 आलोचनात्मक प्रश्नों मे 1 प्रश्न का उत्तर -10
- इकाई- 2- 4 श्लोकों में से 2 की सप्रसंग व्याख्या -10
- इकाई- 3- 4 श्लोकों में से 2 की सप्रसंग व्याख्या -10
- इकाई- 2 और 3- 4 में से 2 आलोचनात्मक प्रश्न -14
- इकाई- 4- चार प्रश्नों में से किन्हीं दो पर टिप्पणी -10